



COMPILED

संस्कृतवाक्यप्रबोधः ॥

श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीनिर्मितः ॥

अजमेरनगरे

वैदिकयन्त्रालये मुद्रितः

पठनपाठनव्यवस्थायां द्वितीयं पुस्तकम् ।

इस पुस्तक के छापने का अधिकार किसी को नहीं है ।

क्योंकि

इसका कॉपीराइट करवाई गई है।

संवत् १९७० वि०

नवमवार

५०००

श्रीमद्दयानन्दाब्द ३१

मूल्य =)

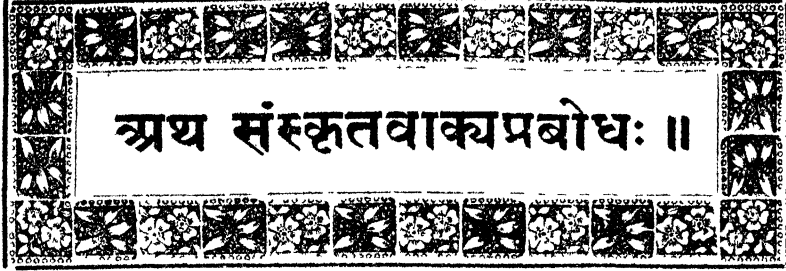
डाकव्यय ॥



COMPILED

CHECKED 1973

परमगुरुवे परमात्मने नमः



* गुरुशिष्यवार्तालापप्रकरणम् *

भोः शिष्य उत्तिष्ठ प्रातःकालो जातः ।
उत्तिष्ठापि ।

अन्ये सर्वे विद्यार्थिन उत्थिता न वा ?
अधुना तु नोत्थिता खलु ।
तानपि सर्वानुत्थापय ।
सर्व उत्थापिताः ।

सम्प्रत्यस्माभिः किं कर्त्तव्यम् ?
आवश्यकं शौचादिकं कृत्वा सन्ध्या-
वन्दनम् ।

आवश्यकं कृत्वा सन्ध्योपासिताऽतः
परमस्माभिः किं करणीयम् ?

अग्निहोत्रं विधाय पठत ।
पूर्वं किं पठनीयम् ?
वर्णोच्चारणशिक्षामधीध्वम् ।

पश्चात्किमध्येतव्यम् ।
किञ्चित्संस्कृतोक्तिबोधः क्रियताम् ।
पुनः किमभ्यसनीयम् ?

हे शिष्य ! उठ सवेरा हुआ ।
उठता हूं ।

और सब विद्यार्थी उठे वा नहीं ?
अभी तो नहीं उठे हैं ।
उन सब को भी उठा दे ।
सब उठा दिये ।

इस समय हम को क्या करना चाहिये ?
आवश्यक शरीरशुद्धि करके सन्ध्योपासना ।

आवश्यक कर्म करके सन्ध्योपासन कर-
लिया इसके आगे हम को क्या करना
चाहिये ?

अग्निहोत्र करके पढ़ो ।
पहिले क्या पढ़ना चाहिये ?
वर्णोच्चारणशिक्षा को पढ़ो ।
पीछे क्या पढ़ना चाहिये ?

कुछ संस्कृत बोलने का ज्ञान किया जाय ।
फिर किसका अभ्यास करना चाहिये ?

यथायोग्यव्यवहारानुष्ठानाय प्रयतध्वम् ।

कुतोऽनुचितव्यवहारकर्तृर्विद्यैव न जा-
यते ।

को विद्वान् भवितुमर्हति ?

यः सदाचारी प्राज्ञः पुरुषार्थी भवेत् ।
क्रीडशादाचार्यादधीत्य परिदतो भ-
वितुं शक्नोति ?

अनूचानतः ।

अथ किमध्यापयिष्यते भवता ?

अष्टाध्यायीमहाभाष्यम् ।

किमेनेन पठितेन भविष्यति ?

शब्दार्थसम्बन्धविज्ञानम् ।

पुनः क्रमेण किं किमध्येतध्यम् ?

शिक्षाकल्पनिघण्टुनिरुक्तछन्दोज्योति-
षाणि वेदानामङ्गानि मीमांसावैशेषि-
कन्याययोगसांख्यवेदान्तान्युपाङ्गान्या-
युर्धनुर्गान्धर्वार्थानुपवेदानैतरेयशतपथ-
सामगोपथ ब्राह्मणान्यधीत्य ऋग्यजु-
स्सामाऽथर्ववेदान् पठन्तु ।

एतत्सर्वं विदित्वा किं कार्यम् ?

धर्मजिज्ञासाऽनुष्ठाने एतेषामेवाऽध्या-
पनं च ।

यथोचित व्यवहार करने के लिये प्रयत्न
करो ।

क्योंकि उलटे व्यवहार करनेहारे को विद्या
ही नहीं होती ।

कौन मनुष्य विद्वान् होने के योग्य होता है ।
जो सत्याचरणशील बुद्धिमान् पुरुषार्थी हो ।
कैसे आचार्य से पढ़ के पण्डित हो
सकता है ?

पूर्ण विद्यावान् वक्ता से ।

अब आप इसके अनन्तर हम को क्या
पढ़ाइयेगा ?

अष्टाध्यायी और महाभाष्य ।

इसके पढ़ने से क्या होगा ?

शब्द अर्थ और सम्बन्धों का यथार्थबोध ।
फिर क्रम से क्या २ पढ़ना चाहिये ।

शिक्षा, कल्प, निघण्टु, निरुक्त, छन्द और
ज्योतिष वेदों के अङ्ग । मीमांसा वैशे-
षिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त
उपाङ्ग । आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद,
और अथर्ववेद उपवेद । ऐतरेय, शतपथ,
साम और गोपथ ब्राह्मण ग्रन्थों को प्रढ़के
ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद
को पढ़ो ।

इन सब को जान के फिर क्या करना
चाहिये ?

धर्म के जानने की इच्छा तथा उस का
अनुष्ठान और इन्हीं को सर्वदा पढ़ना ।

नामनिवासस्थानप्रकरणम् ॥

तव किन्नामास्ति ?

देवदत्तः ।

कोऽभिजनो युवयोर्वर्त्तते ?

कुरुक्षेत्रम् ।

युष्माकं जन्मदेशः को विद्यते ?

पञ्जालाः ।

भवन्तः कुत्रत्याः ?

वयं दक्षिणात्याः स्मः ।

तत्र का पू-र्वः ?

मुम्बापुरी ।

इमे क निवसन्ति ?

नयपाले ।

अयं किमधीते ?

व्याकरणम् ।

त्वया किमधीतम् ?

न्यायशास्त्रम् ।

अयं भवदीयश्चात्रः किं प्रचर्चयति ?

ऋग्वेदम् ।

त्वं किं कर्तुं गच्छसि ?

पाठाय ब्रजामि

कस्मादधीषे ?

यज्ञदत्तात् ।

इमे कुतोऽधीयते ?

विष्णुमित्रात् ।

त्वयि पठति कियन्तः संवत्सरा व्यतीताः ?

पञ्च ।

भवान् कतिवार्षिकः ?

तेरा क्या नाम है ।

देवदत्त ।

तुम दोनों का जन्मदेश कौन है ?

कुरुक्षेत्र देश ।

तुम्हारा जन्मदेश कौन है ?

पञ्जाब ।

आप कहां के हो ?

हम दक्षिणी हैं ।

वहां आप के निवास की कौन नगरी है ?

मुम्बई ।

ये लोग कहां रहते हैं ।

नयपाल में ।

यह क्या पढ़ता है ?

व्याकरण को ।

तूने क्या पढ़ा है ?

न्यायशास्त्र ।

यह आप का विद्यार्थी क्या पढ़ता है ?

ऋग्वेद को ।

तू क्या करने को जाता है ?

पढ़ने के लिये जाता हूं ।

किससे पढ़ता है ?

यज्ञदत्त से ।

ये किससे पढ़ते हैं ?

विष्णुमित्र से ।

तुम्हें को पढ़ते हुए कितने वर्ष बीते ?

पांच ।

आप कितने वर्ष के हुए ?

त्रयोदशवार्षिकः ।

त्वया पठनारम्भः कदा कृतः ?

यदाहमष्टवार्षिकोऽभूवम् ।

तव मातापितरौ जीवतो न वा ?
जीवतः ।

तव कति भ्रातरो भगिन्यश्च ?

त्रयो भ्रातरश्चैका भगिन्यस्ति ।

तेषु त्वं ज्येष्ठस्ते, सा, वा ?

अहमेवाग्रजोऽस्मि ।

तव पितरौ विद्वांसौ न वा ?

महाविद्वांसौ स्तः ।

तर्हि त्वया पित्रो सकाशात्कुतो न विद्या
गृहीता ?

अष्टमवर्षपर्यन्तं कृता ।

अत ऊर्ध्वं कुतो न कृता ?

मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो
वेदेति शास्त्रविधेः ।

अन्यच्च गृहे कार्यबाहुल्येन निरन्तर-
मध्ययनमेव न जायते ।

अतःपरं कियदर्पपर्यन्तमध्येष्यसे ?

पञ्चत्रिंशद्वर्षाणि ।

तेरह वर्ष के ।

तूने पढ़ने का आरम्भ कब किया था ?

जब मैं आठ वर्ष का हुआ था ।

तेरे माता पिता जीते हैं वा नहीं ?
जीते हैं ।

तेरे कितने भाई और बहिन हैं ?

तीन भाई और एक बहिन है ।

उनमें तू ज्येष्ठ वा तेरे भाई अथवा बहिन ?

मैं ही सब से पहिला जन्मा हूं ।

तेरे माता पिता विद्या पढ़े हैं वा नहीं ?
बड़े विद्वान् हैं ।

तो तूने माता पिता से विद्या ग्रहण क्यों
न की ?

आठवें वर्ष पर्यन्त की थी ।

इससे आगे क्यों न की ?

माता पिता से आठवें वर्ष पर्यन्त इसके
आगे आचार्य से पढ़ने का शास्त्र में वि-
धान है इस से ।

और भी घर में बहुत काम होने से निर-
न्तर पढ़ना ही नहीं होता ।

इसके आगे कितने वर्ष पर्यन्त पढ़ेगा ?
पैंतीस वर्ष तक ।

गृहाश्रमप्रकरणम् ॥

पुनस्ते का चिकीर्षास्ति ?

गृहाश्रमस्य ।

किंच भोः पूर्णविद्यस्य जितेन्द्रियस्य

परोपकारकरणाय संन्यासाश्रमग्रहणं

फिर तुम्ह को क्या करने की इच्छा है ?

गृहाश्रम की ।

क्यों जी ! जिस को पूर्ण विद्या और जो
जितेन्द्रिय है उस को परोपकार करने

शास्त्रोक्तमस्ति तन्न करिष्यसि ?

किं गृहाश्रमे परोपकारो न भवति ?
यादृशः सन्यासाश्रमिणा कर्तुं श-
क्यते न तादृशो गृहाश्रमिणाऽनेक-
कार्यैः प्रतिबन्धकत्वेनाऽस्य सर्वत्र
भ्रमणाशक्यत्वात् ।

के लिये संन्यासाश्रम का ग्रहण करना शा-
स्त्रोक्त है इसको न करोगे ?

क्या गृहाश्रम में परोपकार नहीं होता ?
जैसा संन्यासाश्रमी से मनुष्यों का उपकार
हो सकता है वैसा गृहाश्रमी से नहीं हो
सकता क्योंकि अनेक कामों की रुकावट
से इसका सर्वत्र भ्रमण ही नहीं हो सकता ।

भोजनप्रकरणम् ॥

नित्यः स्वाध्यायो जातो भोजनसमय
आगतो गन्तव्यम् ।

तव पाकशालायां प्रत्यहं भोजनाय किं
किं पच्यते ?

शाकसूपौदशिबत्कौदनापूपादयः ।

किं वः पायसादिमधुरेषु रुचिर्नास्ति ?

अस्ति खलु परन्त्वैतानि कदाचिद् २
भवन्ति ।

कदाचिच्चक्षुली श्रीखण्डादयोऽपि
भवन्ति न वा ?

भवन्ति परन्तु यथर्तुयोगम् ।

सत्यमस्माकमपि भोजनादिक्रमेवमेव-
निष्पद्यते ।

त्वं भोजनं करिष्यसि न वा ?

अद्य न करोम्यजीर्णतास्ति ।

अधिकभोजनस्येदमेव फलम् ।

नित्य का पढ़ना पढ़ाना होगया, भोजनस-
मय आया चलना चाहिये ।

तुम्हारी पाकशाला में प्रतिदिन भोजनके
लिये क्या २ पकाया जाता है ?

शाक, दाल, कढ़ी, भात, पुआ और रोटी
आदि ।

क्या आप लोगों की खीर आदि मीठे भो-
जनों में रुचि नहीं है ?

है सही परन्तु ये भोजन कभी २ होते हैं ।

कभी पूरी कचोड़ी शिखरन आदि भी होते
हैं वा नहीं ?

होते हैं परन्तु जैसा ऋतु का योग हो ।
ठीक है हमारे भी भोजन आदि ऐसे ही ब-
नते हैं ।

तू भोजन करेगा वा नहीं ?

आज नहीं करूंगा अजीर्णता है ।

अधिक भोजन का यही फल है ।

बुद्धिमता तु यावज्जीर्यते तावदेव भु-
ज्यते ।

अतिस्वल्पे भुक्ते शरीरबलं ह्रसत्यधिके
चातः सर्वदा मिताहारी भवेत् ।

योऽन्यथाऽऽहारव्यवहारौ करोति स
कथं न दुःखी जायेत ?

येन शरीराच्छ्रमो न क्रियते स नैव
शरीरसुखमाप्नोति ।

येनात्मना पुरुषार्थी न विधीयते न स्या-
त्मनो बलमपि न जायते ।

तस्मात्सर्वैर्मनुष्यैर्यथाशक्ति सत्क्रिया
नित्य साधनीया ।

भो देवदत्त ! त्वामहं निमन्त्रये ।

मन्येऽहं कदा खल्व्वागच्छेयम् ?

श्वो द्वितीयप्रहरमध्ये आगन्तव्यम् ।

आगच्छ भो आसनमध्यास्व ।

भवता ममोपरि महती कृपा कृता ।

बुद्धिमान् पुरुष तो जितना पचे उतना ही
खाता है ।

बहुत कम और अत्यधिक भोजन करने में
शरीर का बल घटता है इससे सब दिन
मिताऽऽहारी होवे ।

जो उलट पलट आहार और व्यवहार क-
रता है वह क्यों न दुःखी होवे ।

जो शरीर को प्राप्त होकर परिश्रम नहीं क-
रता वह शरीर के सुख को प्राप्त नहीं होता ।

जो आत्मा से पुरुषार्थ नहीं करता उसको
आत्मा का बल भी नहीं होता ।

इसमें सब मनुष्यों को यथाशक्ति उत्तम
कर्मों की साधना नित्य करनी चाहिये ।

हे देवदत्त ! मैं तुम्हारा निमन्त्रण करता हूँ ।

मैं मानता हूँ परन्तु किस समय आऊँ ?

कल दोपहर दिनचढ़े आना चाहिये ।

हे सुजन ! आइये आसन पर बैठिये ।

आप ने मुझ पर बड़ी कृपा की ।

देशदेशान्तरप्रकरणम् ॥

भवानेतान् जानातीये महाविद्वांसः सन्ति ।
किन्नाभान एते कुत्रत्याः खलु ?

अयं यज्ञदत्तः काशीनिवासी ।

विष्णुमित्रोऽयं कुरुक्षेत्रं वासव्यः ।

सोमदत्तोऽयं मथुराः ।

अयं सुशर्मा यमपुत्रियः ।

आप इनको जानते हैं ये बड़े विद्वान् हैं ।
इनके क्या नाम और ये कहां २ के
रहनेवाले हैं ?

यह यज्ञदत्त काशी में निवास करता है ।

यह विष्णुमित्र कुरुक्षेत्र में वसता है ।

यह सोमदत्त मथुरा में रहता है ।

यह सुशर्मा यमपुत्रिय में रहता है ।

अयमाश्वलायनो दाक्षिणात्योऽस्ति ।
अयं जयदेवः पाश्चात्यो वर्तते ।
अयं कुमारभट्टो बाङ्गो विद्यते ।
अयं कापिलेयः पाताले निवसति ।

अयं चित्रभानुर्हरिवर्षस्थः ।

इमौ सुकामसुभद्रौ चीननिकायौ ।
अयं सुमित्रो गन्धारस्थायी ।

अयं सुभट्टो लङ्काजः ।
इमे पञ्च सुवीगातिवलसुहृत्सुधर्मशतध-
न्वानो मारवाः ।
एते मया आमन्त्रिताः स्वस्वस्थानाद्वा-
गताः ।
इमे शिवकृष्णगोपालमाधवसुचन्द्रपद्म-
मभूदेवचित्रसेनमहाराथा अत्रत्याः ।

अहोभाग्यं मे यद्भवत्कृपयैतेषामपि
समागमो जातः ।
अहमपि सभवतः सर्वानेतान्निमन्त्रयि-
तुमिच्छामि ।
अस्माभिर्भवन्निमन्त्रणमूरीकृतम् ।
प्रीतोऽस्मि परन्तु भवद्भोजनार्थं किं किं
पक्त्व्यम् ?

यद्यद्भोजितुमिच्छास्ति तच्चदाज्ञापयन्तु ।

यह आश्वलायन दक्षिणी है ।
यह जयदेव पश्चिमदेशवासी है ।
यह कुमारभट्ट बंगाली है ।
यह कापिलेय पाताल अर्थात् अमेरिका में
रहता है ।

यह चित्रभानु हिमालय से उत्तर हरिवर्ष
अर्थात् यूरोप में रहता है ।
ये सुकाम और सुभद्र चीन के वासी हैं ।
यह सुमित्र गन्धार अर्थात् काबिल कन्धार
का करने वाला है ।

यह सुभट्ट लंका में जन्मा है ।
सुवीर, अतिवल, मुकर्मा, सुधर्मा और
शतधन्वा ये पांच मारवाड़ के रहने वाले हैं ।
ये सब मेरे बुलाये हुए अपने २ घर से
आये हैं ।

शिव, कृष्ण, गोपाल, माधव, मुचन्द्र, प्र-
कग, भूदेव, चित्रसेन और महाराथ ये नव
इस मध्यदेश के रहने वाले हैं ।

मेरा बड़ा भाग्य है कि जो आप की कृपा
से इन मत्पुरुषों का भी मिलाप हुआ ।
मैं भी आप के समेत इन सब का निम-
न्त्रण करना चाहता हूँ ।

हमने आप का निमन्त्रण स्वीकार किया ।
आप के निमन्त्रण मानने से मैं बड़ा प्रसन्न
हुआ परन्तु आप के भोजन के लिये क्या
क्या पकाया जाय ?

जिस २ पदार्थ के भोजन की इच्छा हो
उस २ की आज्ञा कीजिये ।

भवान् देशकालज्ञः कथनेन किं यथा-
योग्यमेव पक्तव्यम् ।

सत्यमेवमेव करिष्यामि ।

उत्तिष्ठत भोजनसमय आगतः पाकः
सिद्धो वर्त्तते ।

भो भृत्य ! पाद्यमर्घ्यमाचमनीयं जलं
देहि ।

इदमानीतं गृह्यताम् ।

भोः पाचकाः सर्वान् पदार्थान् क्रमेण
परिवेषिष्ट ।

शुद्धीध्वम् ।

भोजनस्य सर्वे पदार्थाः श्रेष्ठा जाता
न वा ?

अत्युत्तमाः सम्पन्नाः किं कथनीयम् ।

भवता किंचित् पायसं ग्राह्यं वा यस्ये-
च्छाऽस्ति ।

प्रभूतं भुक्तं वृत्ताः स्मः ।

तर्ह्युत्तिष्ठत ।

जलं देहि ।

गृह्यताम् ।

ताम्बूलादीन्यानीयताम् ।

इमानि सन्ति गृह्यन्तु ।

आप देशकाल को जानते हैं कहने से क्या
यथायोग्य ही पकाना चाहिये ।

ठीक है ऐसा ही करूंगा ।

उठिये भोजनसमय आया पाक तैयार है ।

हे नौकर ! इन को पग हाथ मुख धोने
के लिये जल दे ।

यह लाया लीजिये ।

हे पाचक लोगो ! सब पदार्थों को क्रम से
परोसो ।

भोजन कीजिये ।

भोजन के सब पदार्थ अच्छे हुए हैं वा
नहीं ?

क्या कहना है बड़े उत्तम हुए हैं ।

आप थोड़ीसी खीर लीजिये वा जिसकी
इच्छा हो ।

बहुत रुचि से भोजन किया वृत्त हो गये
हैं ।

तो उठिये ।

जल दे ।

लीजिये ।

पान बीड़े इलायची आदि लाओ ।

ये हैं लीजिये ।

सभाप्रकरणम् ॥

इदानीं सभायां काचिच्चर्चा विधेया ।
धर्मः किलक्षणेऽस्तीति पृच्छामि ?

अब सभामें कुछ वार्तालाप करना चाहिये ।
मैं पूछता हूं कि धर्म का क्या लक्षण है ?

वेदप्रतिपाद्यो न्याय्यः पक्षपातरहितो
यश्च परोपकारसत्याऽऽचरणलक्षणः ।

ईश्वरः कोऽस्तीति ब्रूहि ?

यः सच्चिदानन्दस्वरूपः सत्यगुणकर्म-
स्वभावः ।

मनुष्यैः परस्परं कथं वर्तितव्यम् ?

धर्मसुशीलतापरोपकारैः सह यथा-
योग्यम् ।

वेदोक्त न्यायानुकूल पक्षपात रहित और
जो पराया उपकार तथा सत्याचरणयुक्त
है उमी को धर्म जानना चाहिये ।

ईश्वर किसको कहते हैं आप कहिये ?

जो सच्चिदानन्दस्वरूप और जिसके गुण
कर्म स्वभाव सत्य ही हैं वह ईश्वर
कहाता है ।

मनुष्यों को एक दूसरे के साथ कैसे २
वर्तना चाहिये ?

धर्म, श्रेष्ठ स्वभाव और परोपकार के साथ
जिनसे जैसा व्यवहार करना योग्य हो
वैसा ही उनसे वर्तना चाहिये ।

आर्यावर्तचक्रवर्तिराजप्रकरणम् ॥

अस्मिन् आर्यावर्ते पुरा के के चक्रवर्ति-
राजा अभूवन् ?

स्वयं भुवाद्या युधिष्ठिरपर्यन्ताः ।

चक्रवर्तिशब्दस्य कः पदार्थः ?

य एकस्मिन् भूगोले स्वकीयमाज्ञां
प्रवर्तयितुं समर्थाः ।

ते कीदृशीमाज्ञां प्राचीचरन् ?

यया धार्मिकाणां पालनं दुष्टानां
ताडनं च भवेत् ।

इस आर्यावर्त देश में पहिले कौन २
चक्रवर्ती राजा हुए हैं ।

स्वयम्भू से लेके युधिष्ठिर पर्यन्त ।

चक्रवर्ति शब्द का क्या अर्थ है ?

जो एक भूगोल भर में अपनी राजनीति-
रूप आज्ञा को चलाने में समर्थ हों ।

वे कैसी आज्ञा का प्रचार करते थे ?

जिससे धर्मियों का पालन और दुष्टों का
ताड़न होवे ।

राजप्रजालक्षणराजनीत्यनीतिप्रकरणम् ॥

राजा को भवितुं शक्नोति ?

राजा कौन हो सकता है ?

यो धार्मिकाणां सभाया अधिपतित्वे
योग्यो भवेत् ।

यः प्रजां पीडयित्वा स्वार्थं साधयेत्
स राजा भवितुमर्होऽस्ति न वा ?

नहि नहि नहि स तु दस्युः खलु ।

या राजद्रोहिणी सा तु न प्रजा किन्तु
स्तेनतुल्या मन्तव्या ।

कथंभूताः जनाः प्रजा भवितुमर्हाः ?

ये धार्मिकाः सततं राजाप्रियकारिणः ।

राजपुरुषैरप्येवमेव प्रजाप्रियकारिभिः
सदा भवितव्यम् ।

जो धर्मात्माओं की सभा का सभापति
होने योग्य होवे ।

जो प्रजा को दुःख देकर अपना प्रयोजन
साधे वह राजा हो सकता है वा नहीं ?
नहीं नहीं नहीं वह तो डाकू ही है ।

जो राजव्यवहार में विरोध करे वह प्रजा
तो नहीं किन्तु उसको चोर के समान
जमाना चाहिये ।

कैसे मनुष्य प्रजा होने को योग्य हैं ?

जो धर्मात्मा और निरन्तर राजा के प्रिय-
कारी हों ।

राजसम्बन्धी पुरुषों को भी वैसे ही प्रजा
के प्रिय करने में सदा रहना चाहिये ।

शत्रुवशकरणप्रकरणम् ॥

एते शत्रुभिः सह कथं वर्तेरन् ?

राजप्रजोत्तमपुरुषैरयः सामदामदण्ड-
भेदैर्वशमानेयाः ।

सदा स्वराज्यप्रजासेनाकोषधर्मविद्या-
सुशिक्षा वर्द्धनीयाः ।

यथाऽधर्मविद्यादुष्टशिक्षादस्युचोरादयो
न वर्द्धेरंस्तथा सततमनुष्ठेयम् ।

ये लोग शत्रुओं के साथ कैसे वर्तें ?

राजा और प्रजा के श्रेष्ठ पुरुषों को योग्य है
कि अरियों को (साम) मिलाप (दाम)
गुप्तदण्ड और (दण्ड) उनको दण्ड
(भेद) आपस में उनको फोड़ देना उन-
से वश में करना चाहिये ।

सब दिन अपना राज्य, प्रजा, सेना, कोष,
धर्म, विद्या और श्रेष्ठ शिक्षा बढ़ाते रहना
चाहिये ।

जिस प्रकार से अधर्म, अविद्या, बुरी शिक्षा,
डाकू और चोर आदि न बढ़ें वैसे निरन्तर
पुरुषार्थ करना चाहिये ।

धार्मिकैः सह कदापि न यादव्यम् ।

निर्जिता अपि दुष्टा विनयेन सत्कर्तव्याः ।

राजप्रजाजनाः प्राणवत् परस्परं सं-
पोष्य सुखिनो भवन्तु ।

कर्षिते क्षयरोगवदुभे विनश्यतः ।

सदा ब्रह्मचर्येण विद्यया च शरीरात्म-
बलभेधनीयम् ।

यथा देशकालं पुरुषार्थेन यथावत्
कर्माणि कृत्वा सर्वथा सुखयितव्यम् ।

धर्मात्माओं के साथ कभी लड़ाई न करनी
चाहिये ।

पराजित किये शत्रुओं का भी विनय के
साथ मान्य करना चाहिये ।

राजा और प्रजा प्राण के तुल्य एक दूसरे
की पुष्टि करके सदा सुखी रहें ।

एक दूसरे को निर्बल करने से दमरोग के
समान दोनों निर्बल होकर नष्ट हो जाते हैं ।

सब काल में ब्रह्मचर्य और विद्या से शरीर
और आत्मा का बल बढ़ाते रहना
चाहिये ।

देश काल के अनुसार उद्यम से ठीक २
कर्म करके सब प्रकार सुखी रहना चाहिये ।

वैश्यव्यवहारप्रकरणम् ॥

वैश्याः कथं वर्तन्ते ?

सर्वा देशभाषातेखाव्यवहारं च विज्ञाय
पशुपालनकृषिविक्रयादिव्यापारकुप्रीद-
वृद्धिकृषिकर्माणि धर्मेण कुर्वन्तः ।

वनियं लोग कैसे वर्तें ?

सब देशभाषा और हिसाब को ठीक २ जान
कर पशुओं की रक्षा लेन डेन आदि व्यव-
हार व्याजवृद्धि और खेती कर्म धर्म के
साथ करते हूँ ।

कुसीदग्रहणप्रकरणम् ॥

यद्येकवारन्दद्याद् गृह्णीयाच्च तर्हि कु-
सीदवृद्ध्या द्वैगुण्ये धर्मोऽधिकेऽधर्म
इति वेदितव्यम् ।

जो एक बार दें लें तो व्याजवृद्धि सहित मूल
धन द्विगुण तक लेने में धर्म और अधिक
लेने में अधर्म होता है ऐसा जानना
चाहिये ।

प्रतिमासं प्रतिवर्षं वा यदि कुसीदं गृ-
हीयाद्यदा समूलं द्विगुणं धनमागच्छे-
त्तदा मूलमपि त्याज्यम् ।

जो महीने २ में अथवा वर्ष २ में व्याज
लेता जाय तो जब दूना धन आजाय फिर
आगे कुछ भी न लेना चाहिये ।

नौकाविमानादिचालनप्रकरणम् ॥

त्वं नौकाश्चालयसि न वा ?
चालयामि ।
नदीषु वा समुद्रेषु ?
उभयत्र चालयामि ।
कस्यान्दिशि कस्मिन्देशे गच्छन्ति ?
सर्वासु दिक्षु पातालदेशपर्यन्तम् ।
ताः कीदृश्यः सन्ति केन चलन्ति ?
कैवर्त्तवाय्वग्निजलकलावाष्पादिभिः ।
याः पुरुषाश्चालयन्ति ता इस्वाः या
महत्यन्ता वाय्वादिभिश्चालयन्ते ता-
श्चाश्वतरीश्यामकर्णाश्वाख्याः सन्ति ।
विमानादिभिरपि सर्वत्र गच्छामश्च ।

तू नाव चलाता है वा नहीं ?
चलाता हूँ ।
नदियों अथवा समुद्रों में ?
दोनों में चलाता हूँ ।
किस दिशा और किस देश में जाती हैं ?
सर्व दिशाओं में पातालदेश अर्थात् एमेरि-
का देश पर्यन्त ।
वे नौका कैसी और किससे चलती हैं ?
मल्लाह वायु अग्नि जल कलायन्त्र और
भाफ आदि से ।
जिनको मनुष्य चलाते हैं वे छोटी २
नौका और जो बड़ी होती हैं वे वायु आदि
से चलाई जाती हैं उन के अश्वतरी और
श्यामकर्णाश्च आदि नाम हैं ।
और विमान आदि से सर्वत्र आया जाया
करते हैं ।

क्रयविक्रयप्रकरणम् ॥

अस्य किम्भूयम् ?
पाञ्च रूप्याणि ।
गृहाण्येदं वस्त्रं देहि ।
अद्यश्वो घृतस्य कोऽर्घः ?

इस का क्या मूल्य है ?
पांच रुपये ।
लीजिये पांच रुपये यह वस्त्र दीजिये ।
आज कल घी का क्या भाव है ?

मुद्रैकया सपादप्रस्थं विक्रीयते ।

गुडस्य कोभावः ?

अष्टभिः पणैरेकसेटकमात्रं ददति ।

त्वमापणं गच्छ एतामानय ।

आनीता गृहाय ।

कस्य हृदे दधिदुग्धे अच्छ प्राप्नुतः ?

धनपालस्य ।

स सत्थेनैव क्रयविक्रयौ करोति ।

श्रीपतिर्वणिक्कीदृशोऽस्ति ?

स मिथ्याकारी ।

अस्मिन्संवत्सरे कियांल्लाभो व्ययश्च जातः ?

पंचलक्षाणि लाभो लक्षद्वयस्य व्ययश्च ।

मम खल्वस्मिन् वर्षे लक्षत्रयस्य हानि-
र्जाता ।

कस्तूरी कस्मादासीयते ।

नयपालात् ।

बहुमूल्यमाविकं कुत आनयन्ति ?

कश्मीरात् ।

एक रुपया का सवासेर बेचते हैं ।

गुड़ का क्या भाव है ?

दो आने का एक सेर भर देते हैं ।

तू दूकान पर जा इलायची ले आ ।

ले आया लीजिये ।

किसकी दूकान पर दूध और दही अच्छे
मिलते हैं ?

धनपाल की ।

वह सत्य ही से लेन देन करता है ।

श्रीपति बनियां कैसा है ?

वह झूठा है ।

इस वर्ष में कितना लाभ और खर्च हुआ ।

पांच लाख रुपये लाभ और दो लाख खर्च
हुए ।

मेरी तो इस वर्ष में तीन लाख की हानि
होगई ।

कस्तूरी कहां से लाई जाती है ?

नयपाल से ।

दुशाले आदि कहां से लाते हैं ?

कश्मीर से ।

गमनागमनप्रकरणम् ॥

कुत्र गच्छसि ?

पाटलिपुत्रकम् ।

कदाऽऽगमिष्यसि ?

एकमासे ।

स क गतः ?

शाकमानेतुम् ।

कहां जाते हो ?

पटने को ।

कब आओगे ?

एक महीने में ।

वह कहां गया ?

शाक लेने को ।

क्षेत्रवपनप्रकरणम् ॥

क्षेत्राणि कर्षन्तु ।
 बीजान्युप्तानि न वा ?
 उत्तानि ।
 अस्मिन् क्षेत्रे किमुप्तम् ?
 व्रीहयः ।
 एतस्मिन् ?
 गोधूमाः ।
 अस्मिन् किं वपन्ति ?
 तिलमुद्गमाषाढकीः ।
 एतस्मिन् किमुप्यते ?
 यवाः ।

खेत जोतो ।
 बीज बोये वा नहीं ?
 बोदिये ।
 इस खेत में क्या बोया है ?
 धान ।
 इस में ?
 गेहूं ।
 इस खेत में क्या बोते हैं ।
 तिल मूंग उड़द और अरहर ।
 इस में क्या बोया जाता है ?
 जौ ।

शस्यच्छेदनप्रकरणम् ॥

संप्रति केदाराः पक्काः ।
 यदि पक्काः स्युस्तर्हि लुनन्तु ।
 इदानीं कृषावला अन्योन्य केदारान्
 व्यतिलुनन्ति ।
 एषमो धान्यानि प्रभूतानि जातानि ।
 अत एवैकस्यामुद्राया गोधूमाः स्वारी-
 प्रमिता अन्यानि तण्डुलादीन्यपि किं-
 चिदधिकन्यूनानि मिलन्ति ।

इस समय खेत पक गये हैं ।
 जो पक गये हों तो काटें ।
 इस समय खेती करने वाले आपस में एक
 दूसरे का पारापारो खेत काटते हैं ।
 इस साल में धान्य बहुत हुए हैं ।
 इसी से एक रुपये के गेहूं एक मन और
 चावल आदि अन्न भी मन से कुछ
 अधिक न्यून मिलते हैं ।

गवादिदोहनपरिमाणप्रकरणम् ॥

इयं गौर्दुग्धं ददाति न वा ?

यह गौ दूध देती है वा नहीं ?

ददाति ।
 इयं महिषी कियद्दुग्धं ददाति ?
 दशप्रस्थाः ।
 तवाऽजावयः सन्ति न वा ?
 सन्ति ।
 प्रतिदिनं ते कियद्दुग्धं जायते ? -
 पञ्च खार्यः ।
 नित्यं किंपरिमाणे घृतनवनीते भवतः ?
 सार्द्धद्वादशप्रस्थे ।
 प्रत्यहं कियद् भुज्यते कियञ्च विक्री-
 यते ।
 सार्धद्विप्रस्थं भुज्यते दशप्रस्थं च विक्री-
 यते ।

देती है ।
 यह भैंस कितना दूध देती है ?
 दश सेर ।
 तेरे बकरी भेड़ हैं वा नहीं ?
 हैं ।
 नित्य तेरे कितना दूध होता है ?
 पांच मन ।
 प्रतिदिन कितना घी और मक्खन होता है ?
 साढ़ेबारह सेर ।
 प्रतिदिन कितना खाया जाता और कितना
 बिकता है ?
 अढ़ाई सेर खाया जाता और दश सेर
 बिकता है ।

क्रयविक्रयार्थप्रकरणम् ॥

एतद्रूप्यैकेन कियन् मिलति ?
 त्रिप्रिप्रस्थम् ।
 तैलस्य कियन् मूल्यम् ?
 मुद्रापादेन सेटकद्वयं प्राप्यते ।
 अस्मिन्नगरे कति हट्टास्सन्ति ?
 पञ्चसहस्राणि ।

ये घी और मक्खन एक रुपया का कितना
 मिलता है ?
 तीन तीन सेर ।
 तेल का क्या मूल्य है ?
 चारआने का दो सेर मिलता है ।
 इस नगर में कितनी दूकानें हैं ?
 पांचहजार ।

कुसीदप्रकरणम् ॥

शतं मुद्रा देहि ।

सौ रुपये दीजिये ।

ददामि परन्तु कियत् कुसीदं दास्यसि ?

प्रतिमासं मुद्रार्द्धम् ।

दूंगा परन्तु कितना व्याज देगा ?

प्रतिमहीने आठआना ।

उत्तमर्णाधमर्णप्रकरणम् ॥

भो अधमर्ण ! यावद्धनं त्वया पूर्वं
गृहीतं तदिदानीं देहि ।

मम सांप्रतं तु दातुं सामर्थ्यं नास्ति ।
कदा दास्यसि ?

मासद्वयाऽनन्तरम् ।

यद्येतावतिसमये न दास्यसि चेत्तर्हि
राजनियमाभिग्रहीष्यामि ।

यद्येवं कुर्या तर्हि तथैव ग्रहीतव्यम् ।

हे ऋणिया ! जो धन तूने पहिले लिया
था वह अब दे ।

मेरा इस समय तो देने का सामर्थ्य नहीं है ।
कब देगा ?

दो महीने के पीछे ।

जो तू इतने समय में न देगा तो राज-
प्रबन्ध से पकड़ा के लूंगा ।

जो ऐसा करे तो वैसे ही लेना ।

राजप्रजासम्बन्धप्रकरणम् ॥

भो राजन् ! ममायमृणं न ददाति ।
यदा तेन गृहीतं तदानीन्तनः कश्चित्
साक्षी वर्त्तते न वा ?

अस्ति ।

तर्त्तानय ।

आनीतोऽयमस्ति ।

हे राजन् ! मेरा यह ऋण नहीं देता ।

जब उसने लिया था उस समय का कोई
साक्षी वर्त्तमान है वा नहीं ?

है ।

तो लाओ ।

लाया यह है ।

साक्षिप्रकरणम् ॥

भोः साक्षिस्त्वमत्र किञ्चिज्जानासि न
वा ?

हे साक्षी ! तू इस विषय में कुछ जानता
है वा नहीं ?

जानामि ।

यादृशं जानासि तादृशं सत्यं ब्रूहि ।

सत्यं वदामि ।

अस्मादनेन मत्समक्षे सहस्रं मुद्रा गृहीताः ।

ओ भृत्य ! तं शीघ्रमानय ।

आनयामि ।

गच्छ राजसभायां राज्ञा त्वमाहूतोऽसि ।

चलामि ।

भो राजकुपस्थितस्सः ।

त्वयाऽस्यर्थं कुतो नादायि ?

अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यमास्ति

षण्मासानन्तरं दास्यामि ।

पुनर्विलम्बन्तु न करिष्यसि ?

महाराज ! कदापि न करिष्यामि ।

अच्छ गच्छ धनपाल यदि सप्तमं मास्यं

न दास्यति तर्क्षेनं निगृह्य दापयिष्यामि ।

अयं मम शतं मुद्रा गृहीत्वाऽधुना न

ददाति ।

किं च भो यदयं वदति तत् सत्यं न वा ?

मिथ्यैवाऽस्ति ।

अहन्तु जानाम्यपि नाऽस्य मुद्रा मया

कदा स्वीकृताः ।

उभयोस्साक्षिणः सन्ति न वा ?

सन्ति ।

जानता हूं ।

जैसा जानता है वैसा सच कह ।

सत्य कहता हूं ।

इससे इसने मेरे सामने सहस्र रुपये लिये थे ।

ओ नौकर ! उस को जलदी लेआ ।

लाता हूं ।

चल राजसभा में राजा ने तुम्हको बुलाया है ।

चलता हूं ।

हे राजन् ! वह आया है ।

तूने इस का ऋण क्यों नहीं दिया ?

इस समय तो मेरा सामर्थ्य नहीं है परन्तु

छः महीने के पीछे दूंगा ।

फिर देर तो न करेगा ?

महाराज ! कभी न करूंगा ।

अच्छा जाओ धनपाल जो यह सातवें

महीने में न देगा तो इसको पकड़ के

दिलादूंगा ।

यह मेरे सौ रुपये लेके अब नहीं देता ।

क्योंजी जो यह कहता है वह सच है वा नहीं ?

भूठ ही है ।

मैं तो जानता भी नहीं कि इसके रुपये

मैंने कब लिये थे ।

दोनों के साक्षी लोग हैं वा नहीं हैं ?

हैं ।

कुत्र वर्तन्ते ?

इम उपतिष्ठन्ते ।

अनेन युष्माकं समक्षे शतं मुद्रा दत्ता न वा ?

दत्तास्तु खलु ।

अनेन शतं मुद्रा गृहीता न वा ?

वयं न जानीमः ।

प्राद्विवाकेनोक्तम् ।

अयमस्य साक्षिणश्च सर्वे मिथ्यावादिनः सन्ति ।

कुत इदमेतेषां परस्परं विरुद्धवचोऽस्ति ।

यतस्त्वया मिथ्यालपितमतएव तवैक-
संवत्सरपर्यन्तं कारागृहे बन्धः क्रियते ।

अयमुत्तमर्णस्त्वदीयान् पदार्थान् गृहीत्वा
विक्रीय वा स्वर्णं ग्रहीष्यति ।

अयं मदीयानि पञ्चशतानि रूप्याणि
स्वीकृत्य न ददाति ।

कुतो न ददासि ?

मया नैव गृहीताः कथं दद्याम् ?

अयम्पम लेखोऽस्ति पश्य तम् ।

आनय ।

गृह्यताम् ।

अयं लेखो मिथ्या प्रतिभाति ।

तस्मान् त्वं षणमासान् कारागृहे वस
तवेमे साक्षिणश्च द्वौ द्वौ मासौ तत्रैव वसेयुः॥

कहां वर्तमान हैं ?

ये खड़े हैं ।

इसने तुम्हारे सामने सौ रुपये दिये वा
नहीं ?

निश्चित दिये तो हैं ।

इसने सौ रुपये लिये वा नहीं ?

हम नहीं जानते ।

वकील ने कहा ।

यह और इसके साक्षी लोग सब झूठ
बोलने वाले हैं ।

क्योंकि यह इन लोगों का वचन परस्पर
विरुद्ध है ।

जिससे तूने झूठ बोला इसी कारण तेरा
एक वर्ष तक बन्दीघर में बन्धन किया
जाता है ।

यह सेठ तेरे पदार्थों को लेकर अथवा बेंच
के अपने ऋण को ले लेगा ।

यह मेरे पांचसौ रुपये लेकर नहीं देता ।

तू क्यों नहीं देता ?

मैंने लिये ही नहीं कैसे दूं ?

यह मेरा लेख है देखिये इसको ?

लाओ ।

लीजिये ।

यह लेख झूठ मालूम पड़ता है ।

इस से तू छः महीने बन्दीगृह में रह और
तेरे साक्षी भी दो दो महीने वहीं रहें ।

सेव्यसेवकप्रकरणम् ॥

भो मङ्गलदास ! सेवार्थं कैङ्कर्यं करिष्यसि ?

करिष्यामि ।

किं प्रतिमासं मासिकं ग्रहीतुमिच्छसि ?
पञ्चरूप्याणि ।

मयैतावदास्यते चेद्यथायोग्या परिचर्या विधेया ।

यदाहं भवन्तं सेविष्ये तदा भवानपि प्रसन्न एव भविष्यति ।

दन्तधावनमानय ।

स्नानार्थं जलमानय ।

उत्तरीयं वस्त्रं देहि ।

आसनं स्थापय ।

पाकं कुरु ।

हे सूद ! त्वयाऽन्नं व्यञ्जनं च सुष्ठु सम्पादनीयम् ।

अथ किं २ कुर्याम् ?

पायसमोदकौदनसूपरोटिकाशाकान्युप-
व्यञ्जनादीनि च

हे मङ्गलदास ! सेवा के लिये नौकरी करेगा ?

करूंगा ।

प्रतिमहीने कितना वेतन लिया चाहता है ?
पांच रुपये ।

मैं इतना दूंगा जो तुझ से ठीक २ सेवा हो सकेगी ।

जब मैं आपकी सेवा करूंगा तब आप भी प्रसन्न ही होंगे ।

दातून ले आ ।

नहाने के लिये जल ला ।

अंगोछा दे ।

आसन रख ।

रसोई कर ।

हे रसोइये ! तू अन्न और शाक आदि उत्तम बना ।

आज क्या २ करूं ?

खीर, लड्डू, चावल, दाल, रोटी, शाक और चटनी आदि भी ।

मिश्रितप्रकरणम् ॥

नित्यप्रति किं वेतनं दास्यसि ?

प्रत्यहं द्वादश पणाः ।

वस्त्राणि शलक्षणे पट्टे प्रक्षालनीयानि ।

नित्यप्रति क्या नौकरी दोगे ?

प्रतिदिन बारह पैसे ।

कपड़े चिकने साफ पत्थर की पटिया पर धोने चाहियें ।

गा बने चारय ।

पुष्पवाटिकायां गन्तव्यमस्ति ।

आम्रफलानि पकानि न वा ?

पकानि सन्ति ।

उपानहावानय ।

गायें बन में चरा ।

फूलों की बगीची में जाना है ।

आम पके वा नहीं ?

पके हैं ।

जूते लाओ ।

गमनागमनप्रकरणम् ॥

अयं रक्तोष्णीषः क गच्छति ?

स्वगृहम् ।

अस्य कदा जन्माऽभूत् ?

पञ्च संवत्सरा अतीताः ।

परेद्युर्ग्रामो गन्तव्यः ।

गमिष्यामि ।

भवान् परेद्युः क्व गन्ता ?

अयोध्याम् ।

तत्र किं कार्यमस्ति ?

मित्रैः सह मेलनं कर्त्तव्यमस्ति ।

कदागतोऽसि ?

इदानीमेवाऽगच्छामि ।

यह लाल पगड़ी वाला कहां जाता है ?

अपने घर को ।

इस का कब जन्म हुआ था ?

पांच वर्ष बीते ।

कल गांव जाना चाहिये ।

जाऊंगा ।

आप कल कहां जाओगे ?

अयोध्या को ।

वहां क्या काम है ?

मित्रों के साथ मेल कर्त्तव्य है ।

कब आया है ?

अभी आता हूं ।

अथ रोगप्रकरणम् ॥

अस्य कीदृशो रोगो वर्धते ?

जीर्णज्वरोस्ति ।

औषधं देहि ।

देदामि ।

इस को किस प्रकार का रोग है ?

जीर्णज्वर है ।

औषध दे ।

देता हूं ।

परन्तु पथ्यं सदा कर्त्तव्यं कुतो नहि
पथ्येन विना रोगो निवर्त्तते ।

अयं कुपथ्यकारित्वात् सदा रुग्णो
वर्त्तते ।

अस्य पित्तकोपो वर्त्तते ।

मम कफो वर्द्धत औषधं देहि ।

निदानं कृत्वा दास्यामि ।

अस्य महान् कासश्चासोऽस्ति ।

मम शरीरे तु वातव्याधिर्वर्त्तते ।

संग्रहणी निवृत्ता न वा ?

अद्यपर्यन्तन्तु न निवृत्ता ।

औषधं संसेव्य पथ्यं करोषि न वा ?

क्रियते परन्तु सुवैद्यो न मिलति कश्चिद्यः
सम्यक् परीक्ष्यौषधं दद्यात् ।

तृषाऽस्ति चेज्जलं पिब ।

परन्तु पथ्य सदा करना चाहिये क्योंकि
पथ्य के विना रोग निवृत्त नहीं होता ।

यह कुपथ्यकारी होने से सदा रोगी रहता
है ।

इसको पित्त कोप है ।

मेरे कफ बढ़ता जाता है औषध दीजिये ।

रोग की परीक्षा करके दूंगा ।

इसको बड़ा कासश्वास अर्थात् दमा है ।

मेरे शरीर में तो वातव्याधि है ।

संग्रहणी छूटी वा नहीं ?

आज तक तो नहीं छूटी ।

औषधि का सेवन करके पथ्य करते हो वा
नहीं ?

करता तो हूं परन्तु अच्छा वैद्य कोई नहीं
मिलता कि जो अच्छे प्रकार परीक्षा करके
औषध देवे ।

प्यास हो तो जल पी ।

मिश्रितप्रकरणम् ॥

इदानीं शीतं निवृत्तमुष्णसमय आगतः ।

हेमन्ते क स्थितः ?

बंगेषु ।

पश्य ! मेघोन्नतिं कथं गर्जति विद्युद्-
द्योतते च ।

अद्य महती वृष्टिर्जाता यया तडागा
नद्यश्च पूरिताः ।

अब तो शीत निवृत्त हुआ गरमी का समय
आया ।

जाड़े में कहाँ रहा था ?

बङ्गाल में ।

देखो ! मेघ की बढ़ती, कैसा गर्जता और
विजुली चमकती है ।

आज बड़ी वर्षा हुई जिससे तालाब और
नदियाँ भर गई ।

शृणु, मयूराः सुशब्दयन्ति ।
 कस्मात् स्थानादागतः ?
 जङ्गलात् ।
 तत्र त्वया कदापि सिंहो दृष्टो न वा ?
 बहुवारं दृष्टः ।
 नदी पूर्णा वर्त्तने कथमागतः ?
 नौकया ।
 आरोहत हस्तिनं गच्छेम ।
 अहन्तु रथेनागच्छामि ।
 अहमश्वोपरि स्थित्वा गच्छेयं शिविका-
 यां वा ?
 पश्य ! शारदं नभः कथं निर्मलं वर्त्तते ।
 चन्द्र उदितो न वा ?
 इदानीन्तु नोदितः खलु ।
 कीदृश्यस्तारकाः प्रकाशन्ते ।
 सूर्योदयाच्चलन्नागच्छामि ।
 कापि भोजनं कृतम् वा ?
 कुतश्च मध्याह्नात् प्राक् ।
 अधुनाऽत्र कर्त्तव्यम् ।
 करिष्यामि ।

सुनो, मोर अच्छा शब्द करते हैं ।
 किस स्थान से आया ?
 जङ्गल से ।
 वहां तूने कभी सिंह भी देखा था वा नहीं ?
 कई बेर देखा ।
 नदी भरी है कैसे आया ?
 नाव से ।
 चढ़ो हाथी पर चलें ।
 मैं तो रथ से आता हूं ।
 मैं घोड़े पर चढ़ के जाऊं अथवा पालकी
 पर ?
 देखो शरदऋतु का आकाश कैसा निर्मल
 है ।
 चन्द्रमा उगा वा नहीं ?
 इस समय तो नहीं उगा है ।
 किस प्रकार तारे प्रकाशमान हो रहे हैं ।
 सूर्योदय से चलता हुआ आता हूं ।
 कहीं भोजन किया वा नहीं ?
 किया था दोपहर से पहले ।
 अब यहां कीजिये ।
 करूंगा ।

विवाहस्त्रीपुरुषालापप्रकरणम् ॥

त्वया कीदृशो विवाहः कृतः ?
 स्वयंवरः ।
 स्वयनुकूलोऽस्ति न वा ?

तूने किस प्रकारका विवाह किया था ?
 स्वयंवर ।
 स्त्री अनुकूल है वा नहीं ?

सर्वथाऽनुकूलाऽस्ति ।

कस्यपस्यानि जातानि सन्ति ?

चत्वारः पुत्रा द्वे कन्ये च ।

स्वामिभ्यमस्ते ।

नमस्ते प्रिये !

कांचित्सेवामनुज्ञापय ।

सर्वथैव सेवसे पुनराज्ञापनस्य आवश्यक-
ताऽस्ति ।

अद्य भवाञ्छ्रमं कृतवानत उष्णेन
जलेन स्नातव्यम् ।

गृहाणोदं जलमासनं च ।

इदानीं भ्रमणाय गन्तव्यम् ।

कु गच्छेव ?

उद्यानेषु ।

सब प्रकार से अनुकूल है ।

कितने लड़के हुए हैं ?

चार पुत्र और दो कन्या ।

स्वामीजी, नमस्ते अर्थात् मैं आप का
सत्कार करती हूँ ।

नमस्ते प्रिया ।

किसी सेवा की आज्ञा करिये ।

सब प्रकार की सेवा करती ही हूँ फिर
आज्ञा कराने की क्या आवश्यकता है ।

आज आपने श्रम किया है इस कारण
गरम जलसे स्नान करना चाहिये ।

लीजिये यह जल और आसन ।

इस समय घूमने के लिये जाना चाहिये ।

कहां चलें ?

बगीचों में ।

स्त्रीश्वश्रूश्वशुरादिसेव्यसेवकप्रकरणम् ॥

हे श्वश्रु ! सेवामाज्ञापय किं कुर्याम् ?

सुभगे ! जलं देहि ।

गृहाणोदमास्ति ।

हे श्वशुर ! भवान् किमिच्छत्याज्ञाप-
यतु ।

हे वशंवदे ! नित्यं सदाचारमाचर ।

हे सास ! सेवा की आज्ञा कीजिये क्या
करूं ?

सुभगे ! जल दे ।

लीजिये यह है ।

हे श्वशुर ! आप की क्या इच्छा है आज्ञा
कीजिये ।

हे वशंवदे ! नित्य सती स्त्रियों का आ-
चरण कर ।

अथ ननन्दभ्रातृजायावादप्रकरणम् ॥

हे ननन्दरिहागच्छ वार्त्तालापं कुर्याव ।
 वद भ्रातृजाये ! किमिच्छसि ?
 तव पतिः कीदृशोऽस्ति ?
 अतीव सुखप्रदो यथा तव ।
 मया त्रीदशः पतिः सुभाग्येन लब्धो-
 स्ति ।
 कदाचिदप्रियं तु न करोति ?
 कदापि नहि किन्तु सर्वदा प्रीतिं
 वर्द्धयति ।
 पश्याभ्यां बाल्यावस्थायां विवाहः कृ-
 तोऽतः सदा दुःखिनौ वर्त्तेते ।

यान्यपत्यानि जातानि तान्यपि रुग्णा-
 न्यग्रेऽपत्यस्याऽऽशैव नास्ति निर्बलत्वात् ।
 पश्य तव मम च कीदृशानि पुष्टान्य-
 पत्यानि द्विवर्षानन्तरं जायन्ते ।

सर्वदा प्रसन्नानि सन्ति वर्द्धन्ते च
 सुशीलत्वात् ।

नह्यस्मिन् संसारेऽनुकूलस्त्रीपतिजन्यस-
 दृशं सुखं किमपि विद्यते ।

इदानीं वृद्धाऽवस्था प्राप्ता यौवनं गतं
 केशाः श्वेता जाताः प्रतिदिनं बलं
 ह्रसति च ।

हे ननन्द ! यहां आओ बात चीत करें ।
 कहो भौजाई ! क्या इच्छा है ।
 तेरा पति कैसा है ?
 अत्यन्त सुख देने वाला है, जैसा तेरा ।
 मैंने तो इस प्रकार का पति अच्छे भाग्य
 से पाया है ।
 कभी कोई बुराई तो नहीं करता ?
 कभी नहीं किन्तु सब दिन प्रीति बढ़ाता
 है ।
 देखो इन दोनों ने बाल्यावस्था में विवाह
 किया है इससे सदा दुःखी रहते ह ।

जो लड़के हुए वे भी रोगी हैं आगे लड़का
 होने की आशा ही नहीं है निर्बलता से ।
 देखो तेरे और मेरे कैसे पुष्ट लड़के दो
 वर्ष के पीछे होते जाते हैं ।

सब काल में प्रसन्न और बढ़ते जाते हैं
 सुशीलता से ।

इस संसार में अनुकूल स्त्री और पुरुष से
 होनेवाले सुख के सदृश दूसरा सुख कोई
 नहीं है ।

इस समय वृद्धावस्था आई जवानी गई
 बाल सफेद हुए और नित्य बल घटता है ।

स इदानीं गमनागमनमपि कर्तुमशक्तो जातः ।

बुद्धिविपर्यासत्वादिपरीतं भाषते ।

अद्याऽस्य मरणसमय आगत ऊर्ध्व-
न्वासत्वात् ।

सोऽद्य मृतः ।

नीयतां श्मशानं वेदमन्त्रैर्घृतादिभिर्द-
द्याताम् ।

शरीरं भस्मीभूतं जातमतस्तृतीयेऽह्न्य-
स्थिसंचयनं कृत्वा पुनस्तन्निमित्तं शो-
कादिकं किञ्चिदपि नैव कार्यम् ।

त्वं मातापित्रोः सेवा न करोष्यतः
कृतघ्नोऽवर्त्तसेऽतो मातापितृसेवा के-
नापि नैव त्याज्या ।

वह इस समय आने जाने को भी अस-
मर्थ हो गया है ।

बुद्धि के विपरीत होने से उलटा बोलता है ।

आज इसके मरने का समय आया ऊपर
को श्वास के चलने से ।

वह आज मर गया ।

ले चलो श्मशान को वेदमन्त्रों करके घी
आदि सुगन्ध से जला दो ।

शरीर भस्म होगया इससे तीमरे दिन
हाड़ों को वेदी से इकट्ठे कर उठा के फिर
उसके निमित्त शोकादि कुछ भी न करना
चाहिये ।

तू माता पिता की सेवा नहीं करता इससे
कृतघ्नी है इसलिये माता पिता की सेवा का
त्याग किसी को कभी न करना चाहिये ।

अथ सायंकालकृत्यप्रकरणम् ॥

इदानीन्तु सन्ध्यासमय आगतः सायं-
सन्ध्यामुपास्य भोजनं कृत्वा भ्रमणं
कुरुत ।

अद्य त्वया कियत्कार्यं कृतम् ?

एतावत्कृतमेतावदवशिष्टमस्ति ।

अद्य कियान्नाभो व्ययश्च जातः ?

पञ्चशतानि मुद्रा लाभः सार्द्धदेशते
व्ययश्च ।

अब तो सन्ध्या समय आया सन्ध्योपासन
और भोजन करके घूमना घामना कर ।

आज तूने कितना काम किया ?

इतना किया और इतना शेष है ।

आज कितना लाभ और खर्च हुआ ?

पाँच सौ रुपये लाभ और अढ़ाई सौ खर्च
हुए ।

इदानीं सामगानं क्रियताम् ।
 वीणादीनि वादित्राययानीयताम् ।
 आनीतानि ।
 वाद्यताम् ।
 गीयताम् ।
 कस्य रागस्य समयो वर्तते ।
 षड्जस्य ।
 इदानीं तु दशघटिकाप्रमिता रात्र्यागता
 शयीध्वम् ।
 गम्यतां स्वस्वस्थानम् ।
 स्वस्वशय्यायां शयनं कर्त्तव्यम् ।
 सत्यमेवेश्वरकृपया सुखेन रात्रिर्गच्छे-
 त्प्रभातं भवेत् ।

इस समय सामवेद का गान कीजिये ।
 वीणादिक बाजे लाइये ।
 लाये ।
 बजाइये ।
 गाइये ।
 किस राग की वेला है ।
 षड्ज की ।
 इस समय तो दश घड़ी रात आई सोइये ।
 जाइये अपने २ घर को ।
 अपने २ पलंग पर सोना चाहिये ।
 सत्य है ऐसे ही ईश्वर की कृपा से सुख-
 पूर्वक रात बीते और सुबेरा होवे ।

शरीराऽवयवप्रकरणम् ॥

अस्य शिरः स्थूलं वर्त्तते ।
 देवदत्तस्य मूर्द्धकेशाः कृष्णा वर्त्तन्ते ।
 मम तु खलु श्वेता जाताः ।
 तवापि केशा अर्द्धश्वेताः सन्ति ।
 अस्य ललाटे सुन्दरमस्ति ।
 अयं शिरसा खल्वाटः ।
 तस्योत्तमे ध्रुवौ स्तः ।
 श्रोत्रेण शृणोषि न वा ?
 शृणोमि ।
 अनया स्त्रिया कर्णयोः प्रशस्तान्याधू-
 षणानि धृतानि ।
 किमयं कर्णाभ्यां बधिरोस्ति ?

इस का शिर बड़ा है ।
 देवदत्त के शिर में बाल काले हैं ।
 मेरे तो सुपेद होगये ।
 तेरे भी बाल आधे सुपेद हैं ।
 इस का माथा सुन्दर है ।
 इसके शिर में बाल नहीं हैं ।
 उस की अच्छी भौंहें हैं ।
 कान से सुनता है वा नहीं ?
 सुनता हूं ।
 इस स्त्री ने कानों में अच्छे सुन्दर गहने
 पहिने हैं ।
 क्या यह कानों से बहिरा है ?

बधिरस्तु न परन्तु श्रवणे ध्यानं न ददाति ।

अयं विशालाक्षः ।

त्वं चक्षुषा पश्यसि न वा ?

पश्यामि परन्त्विदानीं मन्ददृष्टिर्जातो-
हमस्मि ।

इदानीन्ते रक्ते अक्षिणी कथं वर्तेते ?

यतोहं शयनादुत्थितः ।

स काणो धूर्तोऽस्ति ।

द्रष्टव्यमयमन्धः सचक्षुष्कवत् कथं गच्छ-
ति ।

तवाऽक्षिणी कदा नष्टे ।

यदाऽहं पञ्चवर्षोऽभूवम् ।

इदानीन्मन्त्रे रोगोऽस्ति स कथं निव-
त्स्यति ?

अञ्जनार्थौषधसेवनेन निवर्त्तिष्यते ।

तस्य नासिकोचमास्ति ।

भवानपि शुकनासिकः ।

घ्राणेन गन्धं जिघ्रसि न वा ?

श्लेष्मकफत्वान्मया नासिकया गन्धो न
प्रतीयते ।

अयं पुरुषः सुकपोलोऽस्ति ।

अतिस्थूलत्वादस्य नाभिर्गंभीरा ।

त्वमद्य प्रसन्नमुखो दृश्यते किमत्र कार-
णम् ?

अयं सदाऽह्लादितवदनो विद्यते ।

अस्यौष्ठौ श्रेष्ठौ वर्त्तेते ।

अयं लम्बोष्ठत्वाद्भयङ्करोऽस्ति ।

बहिरा तो नहीं परन्तु सुनने में ध्यान नहीं देता ।

यह अच्छे नेत्रवाला है ।

तू आंख से देखता है वा नहीं ?

देखता हूं परन्तु इस समय मन्ददृष्टि अर्थात् थोड़ी दृष्टिवाला होगया हूं ।

इस समय तेरी आंखें लाल क्यों हैं ?

जिससे मैं सोने से उठा हूं ।

वह काना धूर्त है ।

देखना चाहिये यह अन्धा आंखवाले के समान कैसे जाता है ।

तेरी आंखें कब नष्ट हुईं ?

जब मैं पांच वर्ष का हुआ था ।

इस समय मेरे नेत्र में रोग है वह कैसे निवृत्त होगा ?

अञ्जन आदि औषध के सेवन से निवृत्त होगा ।

उसकी नाक अति सुन्दर है ।

आप भी सुगन्ध के सी नाकवाले हैं ।

नाक से गन्ध सूंघते हो वा नहीं ?

सरदी कफ होने से मुझ को नासिका से गन्ध की प्रतीति नहीं होती ।

यह पुरुष अच्छे गालवाला है ।

बहुत मोटा होने से इसकी नाभि गहरी है ।

तू आज प्रसन्नमुख दिखाई देता है इसमें क्या कारण है ?

यह सब दिन प्रसन्नमुख बना रहता है ।

इस के ओष्ठ बहुत अच्छे हैं ।

यह लम्बे ओष्ठवाला होने से भयङ्कर है ।

सर्वैर्जिह्वा स्वादो गृह्यते ।
वाचा सत्यं मियं मधुर सदैव वाच्यम् ।
नैव केनचित्स्वन्वृतादिकं वक्तव्यम् ।

अयं सुदन् वर्त्तते ।
तव दन्ता दृढाः सन्ति वा चलिताः ?
मम दृढा अस्य तु त्रुटिताः सन्ति ।

मन्मुख एकोऽपि दन्तो नास्त्यतः कष्टेन
भोजनादिकं करोमि ।
अस्य श्मश्रूणि लम्बीभूतानि सन्ति ।
तव चिबुकस्योपरि केशा न्यूनाः सन्ति ।
त्वया कण्ठ इदं किमर्थं बद्धम् ?
अस्योरु विस्तीर्णौ स्तः ।
त्वया हृदये किं लिप्तम् ?
इदानीं हेमन्तोऽस्त्यतः कुङ्कुमकस्तूयौ लिप्ते ।

तथा दृच्छूलनिवारणायौषधम् ।
मायावकः स्तनाद्दुग्धं पिबति ।
परय ! देवदत्तोऽयं लम्बोदरो वर्त्तते ।

अयन्तु खलु क्षामोदरः ।
तव पृष्ठे किं लग्नमस्ति ?

किं स्कन्धाभ्यां भारं वहसि ?
पश्याऽस्य क्षत्रियस्य बाहुर्वज्रं येन
स्वभुजबलप्रतापेन राज्यं वर्द्धितम् ।

सबलोग जीभ से स्वाद लिया करते हैं ।
वाणी से सत्य और प्रिय सब दिन बोलना
चाहिये ।
कभी किसी को झूठ बोलना नहीं चाहिये ।

यह अच्छे दांतों वाला है ।
तेरे दांत दृढ़ हैं वा चल गये हैं ?
मेरे दृढ़ हैं अर्थात् निश्चल हैं और इस के
तो दूट गये हैं ।
मेरे मुख में एक भी दांत नहीं है इससे
क्लेश से भोजन करता हूं ।
इसकी मूंछें लम्बी हैं ।
तेरी ठोड़ी के ऊपर बाल थोड़े हैं ।
तूने गले में यह किसलिये बांधा है ?
इसकी जंघा तैयार हैं ।
तूने छाती में क्या लगाया है ?
इस समय हेमन्त ऋतु है इससे केसर और
कस्तूरी लेपन किये हैं ।
वैसे ही हृदयशल निवारण के लिये औषध ।
लड़का स्तन से दूध पीता है ।
देख ! देवदत्त यह बड़े पेटवाला अर्थात्
तुन्दीला है ।

यह तो छोटे पेटवाला है
तेरी पीठ में क्या लगा है ?

क्या तू कम्बों से भार उठाता है ?
देख ! इस क्षत्रिय का बाहुबल जिसने अपने
बाहुबल से राज्य बढ़ाया है ।

मनुष्येण हस्ताभ्यामुत्तमानि धर्मकार्या-
णि सेव्यानि नैव कदाचिदधर्म्याणि ।

अस्य करपृष्ठे करतले च घृतं लग्न-
मस्ति ।

मुष्टिवन्धने सत्येकत्राऽङ्गुष्ठ एकत्र प-
ञ्चाङ्गुलयो भवन्ति ।

शरीरस्य मध्यभागे नाभिः पुरतः प-
श्चिमतः कटिः कथ्यते ।

अयं मल्लः स्थूलोरुः ।

माणवको जानुभ्यां गच्छति ।

अद्यातिगमनेन जङ्घे पीडिते स्तः ।

अहं पद्भ्यां ह्यो ग्राममगमम् ।

अस्य शरीरे दीर्घाणि लोमानि सन्ति ।

तव शरीरे न्यूनानि सन्ति ।

अस्य शरीरचर्म श्लक्ष्णं वर्त्तते ।

पश्यास्य नखा आरक्ताः सन्ति ।

अयं दक्षिणेन हस्तेन भोजनं बायेन
जलं पिबति ।

इदानीं त्वया श्रमः कृतोऽस्त्यतो धमनी
शीघ्रं चलति ।

अधुना तु ममान्तस्त्वग् दह्यतेऽस्थिषु
पीडापि वर्त्तते ।

मनुष्य को चाहिये कि हाथों से उत्तम
धर्मयुक्त कर्म करे न कभी अधर्मयुक्त
कर्मों को ।

इस के हाथ की पीठ और तले में घी
लगा है ।

मूठी बांधने में एक ओर अंगूठा और एक
ओर पांच अंगुली होती हैं ।

शरीर के आगे बीच भाग को नाभि और
पीछे के भाग को पीठ कहते हैं ।

यह पहलवान् मोटी जंघा वाला है ।

लड़का घोंटू के बल से चलता है ।

आज बहुत चलने से जांघें दूखती हैं ।

मैं पैदल कल गांव को गया था ।

इसके शरीर में बड़े २ रोम हैं ।

और तेरे शरीर में थोड़े रोम हैं ।

इसके शरीर का चमड़ा चिकना है ।

देख ! इसके नख कुछ २ लाल हैं ।

यह दाहिने हाथ से भोजन और बांये से
जल पीता है ।

इस समय तूने श्रम किया है इससे नाड़ी
शीघ्र चलती है ।

इस समय मेरे भीतर की त्वचा जलती
और हाडों में पीडा भी है ।

अथ राजसभाप्रकरणम् ॥

तिष्ठ, भो देवदत्त ! त्वया सह गच्छामि
राजसभाम् ।

खड़ा रह देवदत्त ! तेरे साथ मैं भी राज-
सभा को चलता हूं ।

सभाशब्दस्य कः पदार्थः ?

या सत्यासत्यनिर्णयाय प्रकाशयुक्ता वर्त्तेत ।

तत्र कति सभासदः सन्ति ।

सहस्रम् ।

या मम ग्रामे सभास्ति तत्र खलु पञ्च-
शतानि सभासदः सन्ति ।

इदानीं सभायां कस्य विषयस्योपरि
विचारः कर्त्तव्यः ।

युद्धस्य ।

तेन सह युद्धं कर्त्तव्यं न वा ?

यदि कर्त्तव्यं तर्हि कथम् ।

यदि स धर्मात्मा तदा तु न कर्त्तव्यम् ।

पापिष्ठश्चेत्तर्हि तेन सह योद्धव्यमेव ।

सोऽन्यायेन प्रजां भृशं पीडयत्यतो म-
हापापिष्ठः ।

एवं चेत्तर्हि शस्त्रास्त्रपक्षेपयुद्धकुशला
बलिष्ठा कोशधान्यादिसामग्रीसहिता
सेना युद्धाय प्रेषणीया ।

सत्यमेवात्र वयं सर्वे सम्मतिं दद्मः ।

इदानीं कस्यां दिशि कैः सह युद्ध प्र-
वर्त्तते ।

पश्चिमायां दिशि यवनैः सह हरिवर्ष-
स्थानाम् ।

सभा शब्द का क्या अर्थ है ?

जो सच झूठ का निर्णय करने के लिये
प्रकाश से सहित हो ।

वहाँ कितने सभासद् हैं ।

हज़ार ।

जो मेरे ग्राम में सभा है उसमें तो पांच
सौ सभासद् हैं ।

इस समय सभा में किस विषय पर विचार
करना चाहिये ।

युद्ध अर्थात् लड़ाई का ।

उसके साथ युद्ध करना चाहिये वा नहीं ?

यदि करना चाहिये तो कैसे ।

यदि वह धर्मात्मा हो तब तो युद्ध करना
योग्य नहीं ।

और जो पापी हो तो उसके साथ युद्ध
करना ही चाहिये ।

वह अन्याय से प्रजा को निरन्तर पीड़ा
देता है इस कारण से बड़ा पापी है ।

यदि ऐसा है तो शस्त्र अस्त्र चलाने में
और युद्ध में कुशल बड़ी लड़नेवाली ख-
जाना और अन्नादि सामग्री सहित सेना
युद्ध के लिये भेजनी चाहिये ।

सच ही है इसमें हम सब लोग सम्मति
देते हैं ।

इस समय किस दिशा में कौन २ के साथ
युद्ध होता है ।

पश्चिम दिशा में मुसलमानों का और ह-
रिवर्षस्थ अर्थात् यूरोपियन् लोगों का ।

पराजिता अपि यवना अद्याप्युपद्रवं न
त्यजन्ति ।

अयं खलु पशुपक्षिणामपि स्वभावोऽ-
स्ति यदा कश्चित्पशूनादिकं ग्रहीतुमि-
च्छेत् तदा यथाशक्ति युध्यन्त एव ।

हारे हुए मुसलमान लोग अब भी उपद्रव
अर्थात् धूम धाम नहीं छोड़ते ।

यह तो पशु पक्षियों का भी स्वभाव है कि
जब कोई उनके घर आदि को छीन लेने
की इच्छा करता है तब यथाशक्ति युद्ध
करते अर्थात् लड़ते ही हैं ।

अथ ग्राम्यपशुप्रकरणम् ॥

भो गोपाल ! गा वने चारय ।

तत्र या धेनवस्ताभ्योऽर्द्धं दुग्धं त्वया
दुग्ध्वा स्वामिभ्यो देयमर्द्धं च वत्सेभ्यः
पाययितव्यम् ।

एतौ वृषभौ रथे योक्तुं योग्यौ स्तः ।

इमौ हले खलु ।

पश्येमाः स्थूला बहिभ्यो वने चरन्ति ।
आगच्छ भो द्रष्टव्यमभिषाणां युद्धं
परस्परं कीदृशं भवति ।

अस्य राज्ञो बहव उत्तमा अश्वाः सन्ति ।

किमियं राज्ञः सतुरङ्गा सेना गच्छति ?

श्रोतव्यं हरयः कीदृशं हेषन्ते ?

यथा हस्तिनो स्थूलाः सन्ति तथा हस्ति-
न्योऽपि ।

नागास्समं गच्छन्ति ?

शृणु, करिणः कीदृशं बृंहन्ति ।

हे अहिर् ! गौओं को वन में चरा ।

वहां जो नई व्यानी गौयें उनसे आधा
दूध तूने दुहकर मालिक को देना और
आधा बछड़ों को पिलाना चाहिये ।

ये दोनों बैल गाड़ी में वा रथ में जोतने
के योग्य हैं ।

और ये दोनों हल ही में ।

देखिये, ये मोटी भैंसें वन में चरती हैं ।

आओ जी देखने योग्य भैंसों का युद्ध
किस प्रकार आपस में हो रहा है ।

इस राजा के बहुत उत्तम घोड़े हैं ।

क्या यह राजा की घोड़ों सहित सेना जा
रही है ?

सुनिये, घोड़े किस प्रकार हिमहिनाते हैं ?

जैसे हाथी मोटे होते हैं वैसी हथिनी भी ।

हाथी बराबर चाल से चलते हैं ?

सुन, हाथी कैसे चिंहारते हैं ।

पश्येमे गजोपरि स्थित्वा गच्छन्ति ।
 अस्य राज्ञः कतीभास्सन्ति ?
 पञ्च सहस्राणि ।
 रात्रौ श्वानो बुक्कन्ति ।
 मातः कुक्कुटाः संप्रवदन्ति ।
 मार्जारो मूषकानपि ।
 कुलालस्य गर्दभा अतिस्थूलाः सन्ति ।
 शृणु, लम्बकर्णा रासभा रासन्ते ।
 ग्राम्यसूकराः पुरीषं भक्षयित्वा भूमिं
 शुन्वन्ति ।
 षष्टा भारं वहन्ति ।
 अजाविपालोऽजा अबीर्दोमेघ ।
 पशवः पुर्नर्धां जलम् ।
 रक्तमुखो वानरोऽतिदुष्टो भवति कृष्ण-
 मुखस्तु श्रेष्ठः खलु ।
 वानरी मृतकमपि बालकं न त्यजति ।
 गोपालेन गावो दुग्धाः पयो न वा ?
 कपिलाया गोर्मेधुरं पयो भवति ।
 अयं वृषभः कियता मूल्येन क्रीतः ?
 शतैरुप्यैः ।
 कतिभिः पणैः प्रस्थं पयो मिलति ?
 द्वाभ्यां पण्णाभ्याम् ।
 पश्य, देवदत्त ! वानराः कथमुत्प्लवन्ते ?

अयं महाहनुस्वाञ्छनुमान्वर्त्तते ।

देख ये हाथी पर बैठ के जाते हैं ।
 इस राजा के कितने हाथी हैं ?
 पांच हजार ।
 रात में कुत्ते भूंसते हैं ।
 सुबेरे मुरगे बोलते हैं ।
 बिल्ला मूँसों को खाता है ।
 कुम्हार के गदहे अत्यन्त मोटे हैं ।
 सुन, लम्बे कानोंवाले गदहे बोलते हैं ।
 गांव के सुबर मैला खाके भूमि को शुद्ध
 करते हैं ।
 ऊंट बोझ ढोते हैं ।
 गड़रिया बकरी और भेड़ों को दुहता है ।
 पशुओं ने नदी में जल पीया था ।
 लाल मुख का बन्दर बड़ा दुष्ट और काले
 मुँह का लंगूर तो अच्छा होता है ।
 बंदरी मरे हुए बच्चे को भी नहीं छोड़ती ।
 ग्वाले ने गौओं से दूध दुहा वा नहीं ?
 कपिला (पीली) गाय का दूध मीठा
 होता है ।
 यह बैल कितने मोल से खरीदा है ?
 सौ रुपयों से ।
 कितने पैसे सेर दूध मिलता है ?
 दो पैसों से ।
 देख, देवदत्त बंदर कैसे कूदते हैं ?

यह बन्दर बड़ी थुन्डीवाला होने से हनुमान् है ।

अथ ग्रामस्थपक्षिप्रकरणम् ॥

एताभ्यां चटकाभ्यां प्रासादे नीढं
रचितम् ।

अत्राण्डानि धृतानि ।

इदानीं तु चाटकैरा अपि जाताः ।

पश्य, विष्णुमित्र ! कुक्कुटयोर्युद्धम् ।

कुक्कुटी स्वान्यण्डानि सेवते ।

पश्य, शुकानां समूहं यो विरुवस्तुड्डीयते ।

रात्रौ काका न वाश्यन्ते ।

अरे ! भृत्योड्डायय ध्वांसमनेन पातव्य-
जलपात्रे चञ्चुं निक्षिप्य जलं विना-
शितम् ।

वायसेन बालकहस्ताद्रोटिका हृता ।

पश्य, कीदृशं काकौलूकिकं युद्धं प्रवर्त्तते ।

अनेन शुकहंसतिक्षिरिकपोताः पालिताः ।

इन चिड़ियों ने अटारी पर घोंसला बनाया
है ।

यहां अण्डे धरे हैं ।

अब तो इन के बच्चे भी हो गये हैं ।

देख विष्णुमित्र ! मुरगों की लड़ाई ।

मुरगी अपने अंडों को सेवती है ।

देख, सुगों के मुंड को जो चर्चेता हुआ
उड़ा जाता है ।

रात में कौवे नहीं बोलते हैं ।

अरे नौकर ! कौवे को उड़ादे उसने पीने के
जल के बरतन में चोंच डालकर जल नष्ट
कर दिया ।

कौए ने लड़के के हाथ से रोटी लेली ।

देख, किस प्रकार की कौवे और उल्लुओं
की लड़ाई हो रही है ।

इसने सुग्गा हंस तीतर और कबूतर
पाले हैं ।

अथ वन्यपशुप्रकरणम् ॥

वने रात्रौ सिंह गजन्ति ।

शार्दूलं दृष्ट्वा सिंह निर्लीयन्ते ।

ह्यः सिंहो गामहन् ।

परश्वो विक्रमवर्मणा सिंहो हतः ।

वन में रात के समय सिंह गर्जते हैं ।

शार्दूल को देखकर सिंह छिप जाते हैं ।

कल सिंह ने गौ को मार डाला ।

परसों विक्रमवर्मा क्षत्रिय ने सिंह मारा ।

द्रष्टव्यं इस्तिसिहरणम् ।
 जङ्गले इस्तियूथाः परिभ्रमन्ति ।
 इदानीमेव वृकेण मृगो गृहीतः ।
 अयं कुक्कुरो बलवाननेन सिंहेन सहा-
 प्याजिः कृता ।
 पश्य सिंहवराहसंग्रामम् ।
 शूकरा इच्छन्ते प्राणि भक्षयित्वा विना-
 शयन्ति ।
 पश्य, वेगेन धावतो मृगान् ।
 अयं रुरुर्दृष्य भवत्स्थूलोरित् ।
 यो निलयादुत्प्लुत्य धावति स शश-
 स्त्वया दृष्टो न वा ?
 बहुन्दृष्टवान् ।
 कदाचिद्भालवोऽपि दृष्टा न वा ?
 एकदा श्रुद्धेन साकं मय युद्धं जातम् ।
 रात्रौ शृगालाः क्रोशन्ति ।
 कदाचित्खड्गोऽपि दृष्टो न वा ?
 य आरण्या महिषा बलवन्तो भवन्ति
 तान्कदाचिद् दृष्टवान् वा ?

देख हाथी और सिंह की लड़ाई ।
 जंगल में हाथियों के मुँड घूमते हैं ।
 अभी भेड़िये ने हिरन पकड़ लिया ।
 यह कुत्ता बड़ा बलवान् है इसने सिंह
 के साथ भी लड़ाई की ।
 देख सिंह और शूकर का युद्ध ।
 शूकर ऊख के खेतों को खाकर नष्ट कर
 देते हैं ।
 देख, वेग से दौड़ते हुए हिरनों को ।
 यह काला रोज बैल के समान मोटा है ।
 जो आंटी से लपटझपट के दौड़ता है
 उस खरहा को तू ने देखा है वा नहीं ?
 बहुतों को देखा है ।
 कभी रीछ भी देखे हैं वा नहीं ?
 एक समय रीछ के साथ मेरी लड़ाई भी
 हुई थी ।
 रात्रि में सियाल रोते हैं ।
 कभी नैंडा भी देखा वा नहीं ?
 जो आरणा भैसे बलवान् होते हैं उनको
 कभी देखा वा नहीं ?

अथ वनस्थपक्षिप्रकरणम् ॥

कदाचित्सारसावप्युड्डीयमानौ क्रीडन्तौ
 महाशब्दं कुरुतः ।
 श्येनेनातिवेगेन वर्तिका इता ।
 शृणु, तित्तिरयः कीदृशं मधुरं नदन्ति ?

कभी सारस पक्षी भी उड़ते और क्रीड़ा
 करते हुए बड़े शब्द करते हैं ।
 बाज ने बड़े वेग से बटेर मारी ।
 सुन, तित्तिर किस प्रकार मधुर बोलते हैं ?

वसन्ते पिकाः म्रियं कूजन्ति ।

काककोकिलवदुर्वचाः सुवाक् च मनुष्यो भवति ।

अयं देवदत्तो हंसगतिं गच्छति ।

पश्येमे मयूरा नृत्यन्ति ।

उलूका रात्रौ विचरन्ति ।

पश्य वकः सरस्सु पाखण्डिजनवन्मत्स्यान् हन्तुं कथं ध्यायति ?

वलाका अप्येवमेव जलजन्तून् घ्नन्ति ।

पश्य कथञ्चकोरा धावन्ति ।

येऽत्यूर्ध्वमाकाशे गत्वा मांसाय निपतन्ति ते गृध्रास्त्वया दृष्टा न वा ?

मैना मनुष्यवद्ब्रून्ति ।

चिल्लिका माणवकहस्ताद्रोटिकां छित्वाङ्गीयते ।

वसन्त ऋतु में कोयल प्रिय शब्द करते हैं ।

कौवे और कोयल के सदृश दुष्ट और अच्छा बोलनेवाला मनुष्य होता है ।

यह देवदत्त हंस के समान चलता है ।

देखिये मोर नाचते हैं ।

उल्लू रात को विचरते हैं ।

देख बगुला तलाबों में पाखण्डी मनुष्य के तुल्य मछली मारने को किस प्रकार ध्यान करता है ?

वलाका भी इसी प्रकार जलजन्तुओं को मारती हैं ।

देख किस प्रकार चकोर दौड़ते हैं ।

जो बहुत ऊपर आकाश में जाकर मांस के लिये गिरते हैं वे गीध तूने देखे हैं वा नहीं ?

मैना मनुष्य के समान बोलती हैं ।

चील्ह लड़के के हाथ से रोटी छीन कर उड़ जाती है ।

अथ तिर्यग्जन्तुप्रकरणम् ॥

सर्पाः शीघ्रं सर्पन्ति ।

अयं कृष्णः फणी महाविषधारी ।

भवता कदाचिदजगरोऽपि दृष्टो न वा ?

पश्याहिनकुलस्य संग्रामो वर्धते ।

स वृश्चिकेन दृष्टो रोदिति ।

इयं गोधा स्थूलास्ति ।

सर्प जल्दी सकलते हैं ।

यह काला सांप बड़ा विषवाला है ।

आप ने कभी अजगर भी देखा है वा नहीं ?

देख सांप और नेउले का युद्ध होता है ।

वह बिच्छू से काटा गया रोता है ।

यह गोह मोटी है ।

मृषका बिले शेरते ।

मच्छिकां भक्षयित्वा वमनं प्रजायते ।

अत्र वासः कर्त्तव्यो निर्मच्छिकं वर्त्तते ।

मधुमच्छिकादशनेन शोथः प्रजायते ।

अमरा गुञ्जन्तः पुष्पेभ्यो गन्धं गृह्णन्ति ।

मूसे बिल में सोते हैं ।

मक्खी खाकर वमन हो जाता है ।

यहां वास करना चाहिये मक्खी एक भी नहीं है ।

मधुमक्खियों के काटने से सूजन होजाती है ।

भौरें गूंजते हुए, फूलों से सुगन्धि ग्रहण करते हैं ।

अथ जलजन्तुप्रकरणम् ॥

तिमिङ्गिला मत्स्याः समुद्रे भवन्ति ।

रोहिर् सिंहतुण्डराजीवाश्च पुष्करिणी-
नदीतटगसमुद्रेषु निवसन्ति ।

मकरः पशूनपि गृहीत्वा निगलति ।

नक्राग्राहा अपि महान्तो भवन्ति ।

कूर्माः स्वाङ्गानि संकोच्य प्रसारय-
न्ति ।

वर्षासु मण्डूकाः शब्दयन्ति ।

जलमनुष्या अप्सु निमज्ज्य तट आसते ।

तिमिङ्गिल मच्छी समुद्र में होती हैं ।

रोहू सिंहतुण्ड और राजीव इन नामों की मछलियां पुष्करिया नदी तलाब और समुद्र में वास करती हैं ।

मगर पशुओं को भी पकड़ कर निगल जाता है ।

नाके घरियार भी बड़े २ होते हैं ।

कछुए अपने अङ्गों को समेट कर फैलाते हैं ।

वर्षा में मेंढके बोलते हैं ।

जल के मनुष्य पानी में डूबकर तीर पर बैठते हैं ।

अथ वृक्षवनस्पतिप्रकरणम् ॥

पिप्पलाः फलिता न वा ?

पीपल फले हैं वा नहीं ?

इमे वटाः सुच्छायास्सन्ति ।
 पश्येम उदुम्बराः सफला वर्त्तन्ते ।
 इमे बिन्वाः स्थूलफलास्सन्ति ।
 ममोद्यान आम्नाः पुष्पिताः फलिताः सन्ति ।
 इदानीं पक्कफला अपि वर्त्तन्ते ।
 अस्याऽऽमस्य मधुराणि रसवन्ति च फ-
 लानि भवन्ति ।
 तस्य त्वम्लानि भवन्ति ।
 पनसस्य महान्ति फलानि भवन्ति ।
 शिशपायाः काष्ठानि दृढानि सन्ति शाल-
 स्य दीर्घाणि च ।
 अस्य बर्बुरस्य कण्टकास्तीक्ष्णा भवन्ति ।
 बदरीणां तु मधुगम्लानि फलानि कण्ट-
 काश्च कुटिला भवन्ति ।
 कटुकोनिम्बो ज्वरं निहन्ति ।
 मातुलुङ्गकफलरसं सूप्ते निक्षिप्य भो-
 क्तव्यम् ।
 मम वाटिकायां हाडिमफलान्यत्युत्तमा-
 नि जायन्ते ।
 नागरङ्गफलान्यनिय ।
 वसन्ते पलाशाः पुष्पयन्ति ।
 उष्ट्राः शमीवृक्षपत्रफलानि भुञ्जते ।

ये बड़ अच्छी छाया वाले हैं ।
 देख, ये गूलर फलयुक्त हो रहे हैं ।
 ये बेल बड़े २ फल वाले हैं ।
 मेरे बगीचे में आम फूले फले हैं ।
 इस काल में पक्के फलवाले भी हैं ।
 इस आम के मीठे और रसीले फल होते हैं ।
 उस के तो खट्टे होते हैं ।
 कटहल के बड़े २ फल होते हैं ।
 सीसों की लकड़ी कठिन होती और साखू
 की लकड़ी लंबी होती है ।
 इस बबूल के कांटे तीखी अग्नी वाले होते हैं ।
 बेरियों के तो मीठे खट्टे फल और इन के
 कांटे टेढ़े होते हैं ।
 कटुआ नींबू ज्वर का नाश कर देता है ।
 नींबू का रस दाल में डालकर खाने योग्य
 है ।
 मेरे बगीचे में अनार बहुत अच्छे होते हैं ।
 नारंगी के फलों को ला ।
 वसंत ऋतु में ढांक फूलते हैं ।
 ऊंट शमी अर्थात् खीजड (छोंकर) वृक्ष
 के पत्ते और फलों को खाते हैं ।

अथौषधप्रकरणम् ॥

कदलीफलानि पक्वानि न वा ?
 तण्डुलादयस्तु वैश्यप्रकरणे लिखिता-
 स्तत्र द्रष्टव्याः ।

केला के फल पके वा नहीं ?
 चावल आदि तो बनियों के प्रकरण में
 लिखे हैं वहां देख लेना ।

विषनिवारणायाऽपामार्गमानय ।
 निर्गुण्ड्याः पत्राण्यनेयानि ।
 लज्जावत्याः किं जायते ?
 गुडूची ज्वरं निवारयति ।
 शंखावलीं दुग्धे पाचयित्वा पिबेत् ।
 यथर्तुयोगं हरीतकी सेविता सर्वान्
 रोगान्निवारयति ।

शुण्ठीमरीचपिप्पलीभिः कफवातरोगौ
 निहन्तव्यौ ।
 योऽश्वगन्धं दुग्धे पाचयित्वा पिबति
 स पुष्टो जायते ।
 इमानि कन्दानि भोक्तुमर्हाणि वर्चन्ते ।
 एतेषान्तु शाकमपि श्रेष्ठं जायते ।
 अस्यां वाटिकायां गुल्मलताः प्रशंस-
 नीयाः सन्ति ।

विष दूर करने के लिये चिचिड़ा ला ।
 निर्गुण्डी के पत्ते लाने चाहियें ।
 लज्जावन्ती का क्या होता है ?
 गिलोय ज्वर को शांत करती है ।
 शंखावली को दूध में पका के पिये ।
 जिस प्रकार से ऋतु २ में हरबेका सेवन
 करना योग्य है वैसे सेवी हुई हरब सब
 रोगों को छुड़ादेती है ।
 सोंठ मिर्च और पीपल से कफ और वात
 रोगों का नाश करना चाहिये ।
 जो असगन्ध को दूध में पकाके पीता है
 वह पुष्ट होता है ।
 ये कन्द खाने के योग्य हैं ।
 इन कन्दों का तो शाक भी अच्छा होता है ।
 इस बगीचे में गुच्छा और लताप्रतान प्रशं-
 सा के योग्य अर्थात् अच्छे हैं ।

अथात्मीयप्रकरणम् ॥

तव ज्येष्ठो बन्धुर्भगिनी च कास्ति ?
 देवदत्तस्सुशीला च ।

भो बन्धोऽहं पाठाय ब्रजामि ।
 गच्छ प्रिय! पूर्णां विद्यां कृत्वाऽऽगन्तव्यम् ।
 भवतः कन्या अद्यम्ब; किं पठन्ति ?
 वर्णोच्चारणशिक्षादिकं दर्शनशास्त्राणि
 चाधीत्येदानीं धर्मपाकशिल्पगणित-
 विद्या अधीयते ।

तेरे बड़ा भाई और बहिन कौन है ?
 देवदत्त और सुशीला ।

हे भाई ! मैं पढ़ने को जाता हूं ।
 जा प्यारे ! पूरी विद्या करके आना ।
 आपकी बेटियां आजकल क्या पढ़ती हैं ?
 वर्णोच्चारण शिक्षादिक तथा न्याय आदि
 शास्त्र पढ़कर अब धर्म, पाक, शिल्प और
 गणितविद्या पढ़ती हैं ।

भवज्जयेद्युया भगिन्या किं किमधीतमि-
दानीञ्च तथा किं क्रियते ?
वर्णज्ञानमारभ्य वेदपर्यन्ताः सर्वाविद्या
विदित्वेदानीं बालिकाः पाठयति ।

तथा विवाहः कृतो न वा ?
इदानीं तु न कृतः परन्तु वरं परीक्ष्य
स्वयम्बरं कर्तुमिच्छति ।
यदा कश्चित् स्वतुल्यः पुरुषो मिलिष्यति
तदा विवाहं करिष्यति ।
तव मित्रैरधीतं न वा ?
सर्वएव विद्वांसो वर्तन्ते यथाऽहं तथैव
तेऽपि समानस्वभावेषु मैत्र्यासम्भवात् ।

तव पितृव्यः किं करोति ?
राज्यव्यवस्थाम् ।
इमे किं तव मातुलादयः ?
बाढमयं मम मातुल इयं पितृव्यसेयं
मातृव्यसेयं गुरुपत्न्यं च गुरुः ।

इदानीमेते कस्मै प्रयोजनायैकत्रमि-
लिताः ?
मया सत्कारायाऽऽहूताः सन्त आगताः ।
इमे मे मातामहीश्वसुरश्यालादयः सन्ति ।
इमे मम मित्रस्य स्त्रीभगिनीदुहितृजामा-
तसः सन्ति ।
इमौ मम पितृव्यस्य श्यालदौहित्रौ स्तः ।

आपकी बड़ी बहिन क्या २ पढ़ अब वह
क्या करती है ?
अक्षराभ्यास से लेके वेद तक सब पूरी विद्या
पढ़के अब कन्याओं को पढ़ाया करती है ।

उसने विवाह किया वा नहीं ?
अभी तो नहीं किया परन्तु वर की परीक्षा
करके स्वयम्बर करने की इच्छा करती है ।
जब कोई अपने सदृश पति मिलेगा तब
विवाह करेगी ।
तेरे मित्रों ने पढ़ा है वा नहीं ?
सब ही विद्वान् हैं जैसा मैं हूँ वैसे वे भी
हैं क्योंकि तुल्य स्वभाव वालों में मित्रता
का सम्भव है ।

तेरा चाचा क्या करता है ?
राजा का कारवार ।
ये क्या तेरे मामा आदि हैं ?
ठीक यह मेरा मामा यह बाप की बहिन
बूआ यह माता की बहिन मौसी यह गुरु
की स्त्री और यह गुरु है ।
इस समय ये सब किसलिये मिलकर इकट्ठे
हुए हैं ?
मुझसे सत्कार के अर्थ बुलाये हुए आये हैं ।
ये मेरे नानी, ससुर और साले आदि हैं ।
ये मेरे मित्र की स्त्री बहिन लड़की और
जमाई हैं ।
ये मेरे मामा और भानेज हैं ।

अथ सामन्तप्रकरणम् ॥

त्वद्गृहनिगृहे के के निवसन्ति ?

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रः ।

इमे राजसमीपनिवासिनः ।

तेरे घर के पास कौन २ रहते हैं ?

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।

ये राजा के समीप रहने वाले हैं ।

अथ कारुप्रकरणम् ॥

भोस्तच्चस्त्वया नौविमानरथशकटहला-
दीनि निर्माय तत्र प्रशस्तानि कलाकी-
लशलाकादीनि संयोज्य दातव्यानि ।

इदं काष्ठं धित्वा पर्यङ्कं रचय ।

अस्मात्कपाटाः सम्पादनीयाः ।

इमं वृक्षं किमर्थं दिनत्सि ?

मूषलोत्सलयोनिर्माणाय ।

हे बढ़ई ! तुझ को नावें, विमान, रथ, गाड़ी
और हल आदि रचके उन में अत्युत्तम
कलायन्त्र कील कांटे आदि संयुक्त करके
देने चाहिये ।

इस लकड़ी को काट के पलंग बना ।

इससे किवाड़ों को बना ।

इस वृक्ष को किसलिये काटता है ?

मूसल और ऊखरी बनाने के लिये ।

अथायस्कारप्रकरणम् ॥

भो अयस्कार ! त्वयाऽस्यायसो बाणा-
सिशक्तितोमरमुद्गरशतधनुशुण्डयो
निर्मातव्याः ।

एतस्य क्षुरादीनि च ।

इमौ कलशकटाहौ त्वया विक्रीयेते न वा ?
विक्रीणामि ।

एतान् कीलकयटकान् किमर्थान् रचयसि ?
विक्रयणाय ।

हे लोहकार ! तुझ को इस लोहे के बाण,
तलवार, बरछी, तोमर, मुद्गर, बंदूक और
तोप बना देने चाहियें ।

इस के छुरे आदि ।

ये घड़ा और कड़ाही तुम बेचते हो वा नहीं ?
बेचता हूं ।

इन कील कांटों को किसलिये बनाता है ?
बेचने के लिये ।

अथ सुवर्णकारप्रकरणम् ॥

त्वया सुवर्णादिकं नैव चोर्यम् ।

आभूषणान्युत्तमानि निर्मिमीष्व ।

अस्य हारस्य कियन्मूल्यमस्ति ?

पञ्च सहस्राणि राजत्यो मुद्राः ।

इमौ कुण्डलौ त्वया श्रेष्ठौ रचितौ वलयौ
तु न प्रशस्तौ ।

एतान्यंगुलीयकानि मुक्ताप्रवालहरिकनी-
लमणिजटितानि सम्पादय ।

एतेनालङ्कारा अत्युत्तमा रच्यन्ते ।

नासिकाभूषणं सद्या निष्पादय ।

इदं मुकुटं केन रचितम् ?

शिवप्रतापेन ।

अस्य सुवर्णस्य कटककङ्कणनूपुरान्
निर्माय सद्यो देहि ।

तू सोना आदि मत चोराना ।

गहने अच्छे सुन्दर बना ।

इस हार का कितना मोल है ?

पांच हजार रुपये ।

ये कुंडल तूने अच्छे बनाये परन्तु कड़े तो
बिगाड़ दिये ।

ये अंगूठियां मोती, मूंगा, हीरा और नील-
मणि से जड़ी हुई बना ।

इससे गहने बहुत अच्छे बनाये जाते हैं ।

नथुनी शीघ्र बनादे ।

यह मुकुट किसने बनाया ?

शिवप्रतापने ।

इस सोने के कड़ा ककणी वा कंगना और
बिछिया बनाके शीघ्र दे ।

अथ कुलालप्रकरणम् ॥

भो कुलाल ! कुम्भशरामृद्गवकाभिर्मि-
मीस्व घटं देहनेन जलपानेप्यामि ।

अरे कुम्हार ! घड़ा सरवा और मट्टी की
गौओं को बना और घड़ा दे जल लाऊंगा ।

अथ तन्तुवायप्रकरणम् ॥

भो तन्तुवाय ! अस्य सूत्रस्य पटशाद्यु-
ष्णीषाणि वय ।

ओ कोरी ! इस सूत के पटका साड़ी और
पगड़ियां बुन ।

अथ सूचीकारप्रकरणम् ॥

भो सूच्या किं सीव्यसि ?
शिराङ्गरत्नणाधोवस्त्राणि सीव्यामि ।

ओ सूई से क्या सीता है ?
टोपी अंगरखा और पाजामा सीता हूँ ।

अथ मिश्रितप्रकरणम् ॥

भो कारुक ! कटं वय ।
इमे व्याधा मृगादीन्पशून् धनन्ति ।
किराता बने निवसन्ति ।
सकमलानि सरांसि कुत्र सन्ति ?
इमे तडागा ग्रीष्मे शुष्यन्ति ।
कृपाञ्जलमानय ।
अद्य बाण्यां स्नातव्यम् ।
रज्जकेन शतघ्निभुशुण्ड्यादयश्चलन्ति ।
अयं कम्बलस्त्वया कस्माद् गृहीतः कस्मै
प्रयोजनाय ?
कश्मीराच्छीतनिवारणाय ।
परम माणवकाः क्रीडन्ति ।
अस्मिन्गृहेस्त्रस्तराणि श्रेष्ठानि सन्ति ।
इमे चोराः पलायन्ते ।
तत्र दम्युभिरागत्य सर्वन्धनं हृतम् ।
द्वापरान्ते युधिष्ठिरादयो बभूवुः ।
मम पादे कण्टकः प्रविष्ट एनमुद्धर ।
केशान् सम्ब्रय ।
भो नापित ! नखाञ्छिन्धि मुण्डय शिरः
श्मश्रूणि च ।

अरे चटाई वाला चटाई धुन ।
ये बहेलिये हरिन आदि पशुओं को मारते हैं ।
किरात अर्थात् भील लोग वन में रहते हैं ।
कमलवाले तलाब कहां हैं ?
ये सब तलाब गरमी में सूख जाते हैं ।
तू कूप से जल ला ।
आज बावड़ी में नहाना चाहिये ।
बारूद से बन्दूक और तोपें आदि चलती हैं ।
यह कम्बल तूने किससे लिया और किस
प्रयोजन के लिये ?
कश्मीर से जाड़ा छुड़ाने के लिये ।
देख, लड़के खेलते हैं ।
इस घर में बिछौने अच्छे हैं ।
ये चोर लोग भागे जाते हैं ।
वहां डाकू लोगों ने आकर सब धन हरलिया ।
द्वापर के अन्त में युधिष्ठिरादि हुए थे ।
मेरे पैर में कांटा घुस गया इसको
निकाल ।
बालों को सम्भाल ।
ओ नाऊ ! नखों को काट शिर मूँड और
मूँछ भी मूँड ।

अयं शिल्पी प्रासादमत्युत्तमं रचयति ।
अयं कोटपालो न्यायकारी वर्त्तते ।
स तु धर्मात्मानैवास्त्यन्यायकारित्वात् ।

एते राजमन्त्रिणः कुत्र गच्छन्ति ?
राजसभां न्यायकरणाय यान्ति ।
भोस्ताम्बूलानि देहि ।

ददामि ।
भोस्तैलकार ! तिलेभ्यस्तैलं निः-
सार्य देहि ।

दास्यामि ।
अरे रजक ! वस्त्राणि प्रक्षाल्य सद्यो
देयानि ।

कपाटान् बभान ।
इदानीं प्रातःकालो जातः कपाटानुद्-
घाटय ।

सर्वे युद्धाय सज्जा भवन्तु ।
अर्थिप्रत्यर्थिनौ राजगृहे युध्येते ।
किमियं गोधूमान् पिनष्टि ?
कुतोऽयं दुर्गे शतघ्न्यश्चलन्ति ?
तेन भुशुण्ड्या सिंहो हतः ।
तेनाऽसिना तस्य शिरश्छिन्नम् ।

अञ्जनं किमर्थमनन्ति ?
उपानहौ धृत्वा क गच्छसि ?
जङ्गलम् ।
किं स्थान्यामोदनं पचसि मूपं वा ?
कटाहे शाकं पच ।

यह राज अटारी बहुत अच्छी बनाता है ।
यह कोतवाल न्यायकारी है ।
वह कोतवाल तो धर्मात्मा नहीं है अन्या-
यकारी होने से ।

ये राजा के मंत्री लोग कहां जाते हैं ?
राजसभा को न्याय करने के लिये ।
ओ ! पान दे ।

देता हूं ।
ओ तेली ! तिलों से तेल निकाल कर दे ।

दूंगा ।
अरे धोबी ! कपड़ों को धोकर शीघ्र देने
चाहियें ।

किवाड़ों को बन्द कर ।
इस समय सुबेरा हुआ किवाड़े खोल ।

सब सिपाही लोग लड़ाई के लिये तैयार हों ।
मुद्ई और मुदायले कचहरी में लड़ते हैं ।
क्या यह गेहुओं को पीसती है ?
क्यों आज किले में तोपें चलती हैं ?
उसने बन्दूक से बाघ को मारा ।
उसने तलवार से उसका शिर काट
डाला ।

अञ्जन किसलिये आंजता है ?
जूते पहिन के कहां जाता है ?
जङ्गल को ।
क्या बटुवे में भात पकाता है वा दाल ?
कड़ाही में तरकारी पका ।

विरुद्धं वदिष्यसि चेत्तर्हि दन्तांक्षोटयि-
ष्यामि ।

तव पितुस्तु सामर्थ्यं नाभूत् तव तु का
कथा ।

येन प्रजा पाल्यते स कथञ्च स्वर्गं
गच्छेत् ?

यो राज्यं पीडयेत्स कथञ्च नरके पतेत् ?

येनेश्वरमुपास्यते तस्य विज्ञानं कुतो
न वर्द्धेत ?

यः परोपकारी स सततं कथञ्च सुखी
भवेत् ?

अस्यां मञ्जूषायां किमस्ति ?

वस्त्रधने ।

इदानीमपि कुम्भ्यां धान्यं वर्त्तते न वा ?

स्वल्पमस्ति ।

त्वमालसीतिष्ठसि कुतो नोद्योगं करोषि ।

उभयत्र प्रकाशाय देहल्यां दीपं नि-
धेहि ।

तेनासिचर्माभ्यां शतेन सह युद्धं
कृतम् ।

अतिथीन् सेवसे न वा ।

मेक्षासमाजं मा गच्छ ।

यूतसमाह्वयौ कदापि नैव सेवनीयौ ।

विरुद्ध बोलेंगा तो तेरे दांत तोड़ डालूंगा ।

तेरे बाप का तो सामर्थ्य न हुआ तेरी
तो क्या ही बात कहनी है ।

जिसने प्रजा का पालन किया वह स्वर्ग
को क्यों न जाय ?

जो राज्य को नष्ट करे वह क्यों नरक में
न पड़े ?

जो ईश्वर की उपासना करे उसका
विज्ञान क्यों न बढ़े ?

जो परोपकारी है वह सर्वदा सुखी क्यों
न होवे ?

इस संदूक में क्या है ?

कपड़ा और धन ।

अब कोठी में अन्न है वा नहीं ?

थोड़ासा है ।

तू आलसी रहता है उद्योग क्यों नहीं
करता ?

दोनों ओर उजियाला होने के लिये दर-
वाजे पर दिया धर ।

उसने ढाल और तलवार से सौ पुरुषों के
साथ युद्ध किया ।

अतिथियों की सेवा करता है वा नहीं ।

कभी मेले तमाशे में मत जा ।

जो अप्राणी को दाब पर धर के खेलना
वह यूत और प्राणी को दाब पर धर के
खेलना वह समाह्वय कहाता है उनको
कभी न सेवना चाहिये ।

यो मद्यपोऽस्ति तस्य बुद्धिः कथं न
इसेत् ?

यो व्यभिचरेत्स रुग्णः कथं न जायेत् ?

यो जितेन्द्रियः स सर्वं कर्तुं कुतो न शक्नु-
यात् ?

योगाभ्यासः कुतो येन ज्ञानदीप्तिर्भवे-
न्नरः ।

वस्त्रपूतं जलं पेयं मनः पूतं समाचरेत् ।

स भ्रान्तौ कदापि न पतेत् ।

अयं वाचालोऽस्त्यतो वरवरायते ।

भूमितले किमस्ति ?

मनुष्यादयः ।

यः पद्भ्यां भ्रमति सोऽरोगो जायते ।

व्यजनेन वायुं कुरु ।

किं घर्मादागतोऽसि यत् स्वेदो जा-
तोऽस्ति ।

स्वस्थे शरीरे नित्यं स्नात्वा मितं भोक्त-
व्यम् ।

जलवायु शुद्धौ सेवनीयौ ।

सर्वर्तुके शुद्धे गृहे निवसनीयम् ।

नैव केनचिन्मलीनानि वस्त्राणि धार्याणि ।

तव का चिकीर्षास्ति ?

गृहं गत्वा भोक्तुम् ।

जो मद्य पीनेवाला है उसकी बुद्धि क्यों
न न्यून होवे ।

जो व्यभिचार करे वह रोगी क्यों न होवे ?

जो जितेन्द्रिय है वह सब उत्तम काम क्यों
न कर सके ?

जिसने योग का अभ्यास किया है वह
ज्ञानप्रकाश से युक्त होवे ।

वस्त्र से पवित्र किया जल पीना चाहिये
और मन से शुद्ध जाना हुआ काम करना
चाहिये ।

वह भ्रमजाल में कभी नहीं गिरे ।

यह बहुत बोलने वाला है इसी कारण
बड़बड़ाता है ।

भूमि के नीचे क्या है ?

मनुष्य आदि ।

जो पग से चलता है वह रोगरहित होता है ।

पङ्खे से वायु (हवा) कर ।

क्या घाम से आया है जो पसीना
होरहा है ।

अच्छे शरीर होते रोज नहा के थोड़ासा
खाना चाहिये ।

पवित्र जल और वायु का सेवन करना
चाहिये ।

जो सब ऋतुओं में सुख देनेवाला हो
उसी घर में रहना चाहिये ।

किसी को भी मैले कपड़े पहिने न चाहियें ।

तेरी क्या करने की इच्छा है ?

घर जाके खाने की ।

त्वं सकतुं भुङ्क्ष्व न वा ?
 घृतदुग्धमिश्रैः सहाऽग्नि ।
 त्वयाम्रफलानि चूषितानि न वा ?
 उर्वारकफलान्यत्र मधुराणि जायन्ते ।
 इक्षुभ्यो गुडादिकं निष्पद्यते ।
 इदानीमाकण्ठं दुग्धं पीतं मया ।
 तक्रं देहि ।
 अत्र श्वेता शर्करा वर्तते ।
 अयं रुच्या दधनौदनं भुङ्क्ष्व ।
 अद्य मोदका भुक्ता न वा ?
 त्वया कदाचित्कुशराऽपि भुक्ता न वा ?
 मयाऽपूपा भक्षिताः ।
 सशर्करं दुग्धं पेयम् ।
 येन धर्मः सेव्यते स एव सुखी जायते ।

तू सत्तू खाता है वा नहीं ?
 घी दूध और मीठे के साथ खाता हूँ ।
 तूने आम चूसे वा नहीं ?
 खरबूजे के फल यहां मीठे होते हैं ।
 ऊख आदि से गुड़ आदि बनाये जाते हैं ।
 इस समय गले तक मैंने दूध पिया ।
 मठा दे ।
 यहां सफेद चीनी है ।
 यह प्रीति से दही के साथ भात खाता है ।
 आज लड्डू खाये वा नहीं ?
 तूने कभी खिचड़ी भी खाई वा नहीं ?
 मैंने मालपूवे खाये हैं ।
 शर्कर के सहित दूध पीना चाहिये ।
 जो धर्म का सेवन करता है वही सुखी रहता है ।

अथ लेख्यलेखकप्रकरणम् ॥

मनुष्यो लेखाभ्यासं सम्यक् कुर्यात् ।
 अयमत्युत्तममन्त्रविन्यासं करोति ।
 लेखिनीं सम्पादय ।
 मसीपात्रमानय ।
 पुस्तकं लिख ।
 तत्र पत्रं लिखित्वा प्रेषितं न वा ?
 प्रेषितं पञ्चदिनानि व्यतीतानि तस्य
 मत्युत्तरमप्यागतम् ।
 सुवर्णाक्षराणि लिखितुं जानासि न वा ?

मनुष्य लिखने का अभ्यास अच्छे प्रकार
 करे ।
 यह अत्युत्तम अक्षर लिखता है ।
 कलम बनाओ ।
 दवात ला ।
 पोथी लिख ।
 वहां चिट्ठी लिखकर भेजी वा नहीं ?
 भेजी पांच दिन बीते उसका जवाब भी
 आगया ।
 सुनहरी अक्षर लिखने जानता है वा नहीं ?

जानामि तु परन्तु सामग्रीसंचयने लेखने
च विलम्बो भवति ।

यद्यङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां लेखनीं गृहीत्वा
मध्यमोपरि संस्थाप्य लिखेत्तर्हि प्रशस्तो
लेखो जायेत ।

अयमतीव शीघ्रं लिखति ।

एतस्य लेखिनी मन्दा चलति ।

यदि त्वमेकादं सततं लिखेत्तर्हि कि-
यतः श्लोकांलिखितुं शक्नुयाः ?
पञ्चशतानि ।

यदि शिष्टां गृहीत्वा शनैः शनैर्लिखि-
तुमभ्यस्येत्तर्ह्यक्षणां सुन्दरं स्वरूपं
स्पष्टतया च जायेत ।

अस्मिन्नाक्षरसे कज्जलं सम्मेलितं न
वा ?

मेलितं तु न्यूनं खलु वर्त्तते ।

मनुष्यैर्यादृशः पठनाभ्यासः क्रियेत ता-
दृश एव लेखनाभ्यासोऽपि कर्त्तव्यः ।

मया वेदपुस्तकं लेखयितव्यमस्त्येकेन रू-
पेण कियतः श्लोकान्दास्यामि ?

अत्युत्तमानि ग्रहीष्यामि चेत्तर्हि शतत्रयं
मध्यमानि चेच्छतपञ्चकम् ।

साधारणानि चेत्सहस्रं श्लोकान्दा-
स्यामि ।

शतत्रयमेव ग्रहीष्यामि परन्त्वत्युत्तमं
लिखित्वा दास्यामि चेत् ।

वरमेवं करिष्यामि ।

जानता तो हूं परन्तु चीज इकट्ठी करने
और लिखने में देर होती है ।

जो अंगूठा तर्जनी अंगुली से कलम को
पकड़कर बीचली अंगुली पर रखकर
लिखे तो बहुत अच्छा लेख हो ।

यह अत्यन्त जल्दी लिखता है ।

इस की लेखिनी धीरे चलती है ।

यदि तू एक दिन निरन्तर लिखे तो
कितने श्लोक लिख सके ?

पांच सौ ।

यदि शिष्टा ग्रहण कर के धीरे २ लिखने
का अभ्यास करे तो अक्षरों का दिव्यस्व-
रूप और स्पष्टता होवे ।

इस लाख के रस में कज्जल मिलाया है
वा नहीं ?

मिलाया तो है परन्तु थोड़ा है ।

मनुष्य लोग जैसा पढ़ने का अभ्यास करें
वैसा ही लिखने का भी करना चाहिये ।

मुझ को वेद का पुस्तक लिखाना है एक
रुपये से कितने श्लोक देगा ?

जो बहुत अच्छे लोगे तो तीनसौ और
मध्यम लोगे तो पांचसौ ।

यदि बहुत साधारण वा घटिया लोगे तो
हज़ार श्लोक दूंगा ।

तीन ही सौ लूंगा परन्तु बहुत अच्छा लेख
करेगा तो ।

अच्छा ऐसा ही करूंगा ।

अथ मन्तव्यामन्तव्यप्रकरणम् ॥

त्वं जगत्सृष्टारं सच्चिदानन्दस्वरूपं पर-
मेश्वरं मन्यसे न वा ?

तू इस संसार के बनाने वाले सच्चित् और
आनन्दस्वरूप परमेश्वर को मानता है वा नहीं ?

अयं नास्तिकत्वात्स्वभावात्सृष्ट्युत्पत्तिं
मत्त्वेश्वरं न स्वीकरोति ।

यद्ययं कर्तृकार्यरचकरचनाविशेषान्
संसारे निश्चिनुयात्तर्ह्यवश्यं परमात्मानं
मन्येत ।

योऽत्र सृष्टौ रचितरचनां पश्यति स
जीवः कार्यवत्स्वष्टारं कुतो न
मन्येत ?

यत्रोत्तमा धार्मिका आस्तिका विद्वांसो-
ऽध्यापका उपदेष्टारश्च स्युस्तत्र कोपि
कदाचिन्नास्तिको भवितुं नैवाहंते ।

कैः कर्मभिर्मुक्तिर्भवति तदा क्व वसन्ति
तत्र किं भुज्यते च ?

धर्मैः कर्मोपासनाविज्ञानैर्मुक्तिर्जायते
तदानीं ब्रह्मणि निवसन्ति परमा-
नन्दं च सेवन्ते ।

मोक्षं प्राप्य तत्र सदा वसन्त्याहोस्वि-
त्कदाचित्ततो निवृत्य पुनर्जन्मपरणो
प्राप्नुवन्ति ?

प्राप्तमोक्षा जीवास्तत्र सर्वदा न वसन्ति
किन्तु महाकल्पपर्यन्तमर्थाद् ब्राह्ममा-
युर्यावत्तावत्तत्रोषित्वाऽऽनन्दं भुक्त्वा
पुनर्जन्मपरणो प्राप्नुवन्त्येव ।

यह मनुष्य नास्तिक होने से स्वभाव से
सृष्टि की उत्पत्ति को मानकर ईश्वर को
नहीं मानता ।

जो यह नास्तिक कर्त्ता क्रिया बनानेहारा
और बनावट को इस जगत् में निश्चय करे
तो अवश्य ईश्वर को माने ।

जो इस सृष्टि में बने हुए पदार्थों की बनावट
को प्रत्यक्ष देखता है वह जैसे कारीगरी को दे-
खके कारीगर को निश्चय करते हैं वैसे जगत्
के बनानेवाले परमात्मा को क्यों न माने ?

जहां श्रेष्ठ धर्मात्मा आस्तिक विद्वान् लोग
पढ़ानेवाले और उपदेशक हों, वहां कोई भी
मनुष्य नास्तिक कभी नहीं हो सकता ।

किन कर्मों से मुक्ति होती है उस समय
कहां वास करते और वहां क्या भोगते हैं ?

धर्मयुक्त कर्म उपासना और विज्ञान से
मोक्ष होता है उस समय ब्रह्म में मुक्त जीव
रहते और परम आनन्द का सेवन करते हैं ।

जीव मुक्ति को प्राप्त होके वहां सदा रहते
हैं अथवा कभी वहां से निवृत्त होकर पुनः
जन्म और मरण को प्राप्त होते हैं ?

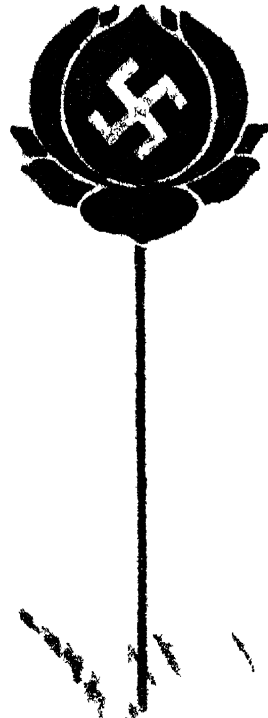
मुक्ति को प्राप्त हुए जीव वहां सर्वदा नहीं
रहते किन्तु जितना ब्राह्म कल्प का परिमाण
है उतने समय तक ब्रह्म में वास कर आ-
नन्द भोग के फिर जन्म और मरण को
अवश्य प्राप्त होते हैं ।

इति श्रीमद्भयानन्दसरस्वतीस्वामिना निर्मितः

संस्कृतवाक्यप्रबोधनामको निबन्धः समाप्तः ॥

संस्कृतविहारः

प्रथमो भागः



८६०

८४५

पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई ४